राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 | ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर स्टुअर्ट लॉ बने नेपाल के हेड कोच | सम्पादकीय | जम्मू-कश्मीर में कब थमेगा आतंक.... | केएल राहुल एसआरएच मुकाबले से पहले दिल्ली... 5

वर्ष 17 अंक 58 | E-mail: dholpur@hotmail.com | धौलपुर, रविवार 30 मार्च 2025 | ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

म्यांमार : भूकंप में मरने वालों की संख्या 1 हजार पहुंची, 2400 से ज्यादा घायल

फिर आया 5 :1 तीव्रता का भूकंप

आर.एन.एस

म्यांमार। म्यांमार में शनिवार दोपहर 3: 30 बजे फिर भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5:1 मापी गई। इस तरह 2 दिन में 5 से ज्यादा तीव्रता वाले तीन भूकंप आ चुके हैं।

शुक्रवार को 7:7 तीव्रता के भूकंप के बाद म्यांमार में भारी तबाही हुई है। मौत का आंकड़ा 10 हजार से ज्यादा हो सकता है। यह आशंका यूनाइटेड स्टेट जियोलॉजिकल सर्वे ने जताई है।

भूकंप के झटके थाईलैंड, बांग्लादेश, चीन और भारत तक महसूस किए गए थे।रॉयटर्स के मुताबिक म्यांमार की सैन्य सरकार ने कहा है कि मरने वालों का आंकड़ा 1, 002 हो चुका हैए जबकि 2400 से ज्यादा लोग घायल हैं। उधरए थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक 30 मंजिला इमारत गिर गई है। इसमें 10 लोगों की मौत हुई है।

म्यांमार में शुक्रवार सुबह 11: 50 बजे 7:7 तीव्रता का भूकंप आया। म्यांमार और थाईलैंड में यह 200 साल का सबसे बड़ा भूकंप है। भारी तबाही के चलते म्यांमार के 6 राज्यों और पूरे थाईलैंड में इमरजेंसी लगा दी गई है।

छत्तीसगढ़ के सुकमा में 17 नक्सलियों का एनकाउंटर

इनमें से 11 महिलाएं

आर.एन.एस

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा और दंतेवाड़ा जिले की सरहद पर शनिवार सुबह पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड और सीआरपीएफ के 500.600 जवानों ने 17 नक्सलियों को मार गिराया। इनमें 11 महिला नक्सली हैं। मुठभेड़ केरलापाल थाना क्षेत्र के उपमपल्ली में हुई। मारे गए नक्सलियों में नक्सल संगठन स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर जगदीश उर्फ बुधरा भी शामिल है। बुधरा पर 25 लाख का इनाम घोषित था। वह दरभा घाटी के झीरम कांड में शामिल था। 2013 में हुई इस वारदात में कांग्रेस नेता महेंद्र कर्मा समेत कई बड़े कांग्रेसी लीडर मारे गए थे।इससे पहले 25 मार्च को सुरक्षाबलों ने 25 लाख रुपए के इनामी नक्सली सुधीर उर्फ सुधाकर समेत 3 नक्सलियों को मार गिराया था। बस्तर रेंज में जवानों ने इस साल अब तक 100 नक्सलियों का एनकाउंटर किया है। इसमें 20 मार्च से 29 मार्च के बीचए यानी 10 दिन में ही 49 नक्सली मारे गए हैं।

पश्चिम बंगाल के मालदा में हिंसा इंटरनेट बंद, 34 गिरफ्तार

उपद्रवियों ने दुकानें, गाड़ियां तोड़ीं, सामान लूटा कलकत्ता हाईकोर्ट ने मांगी रिपोर्ट

आर.एन.एस

मालदा। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के मोथाबाड़ी में 27 मार्च को दो गुटों के बीच हुई हिंसा मामले में 34 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया गया है। घटना के बाद से इलाके में इंटरनेट बंद है। आर्म्ड और रैपिड एक्शन फोर्स की तीन कंपनियां तैनात की गई हैं।

हिंसा को लेकर कलकत्ता हाईकोर्ट ने शुक्रवार को डीएम और एसपी से 3 अप्रैल तक एक्शन रिपोर्ट मांगी है। कोर्ट ने कहा कि राज्य को सावधानी से काम करना चाहिए। साथ ही हिंसा से प्रभावित लोगों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाने चाहिए।रिपोर्ट्स के मुताबिक 26 मार्च को मोथाबाड़ी मस्जिद में नमाज हो रही थी। इस दौरान वहां से एक जुलूस गुजर रहा थाए तभी कुछ लोगों ने धार्मिक नारे लगाए। 27 मार्च को दूसरे समुदाय ने इसका विरोध किया। इस दौरान भीड़ ने दुकानों, घरों और गाड़ियों में तोड़फोड़ और लूट की।

स्थानीय लोगों के मुताबिक 27 मार्च को विरोध प्रदर्शन के दौरान लोगों के हाथ में धार्मिक झंडे थे। नारेबाजी कर रहे लोग अचानक हिंसक हो गए और दुकानोंए घरों में तोड़.फोड़ कीए सामान लूटा और सड़कों पर खड़ी गाड़ियों में आग लगा दी। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए लाठीचार्ज किया और आंसू गैस के गोले दागे। मालदा पुलिस ने लोगों से अपील की कि वे शांति बनाए रखें। सोशल मीडिया पर किसी भी तरह की अफवाह या गलत सूचना पर ध्यान न दें। कुछ लोगों द्वारा जानबूझकर हिंसा भड़काने का प्रयास किया जा रहा है।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा. बुधवार से मोथाबाड़ी में स्थिति तनावपूर्ण है। हिंदू मंदिरों और घरों में तोड़फोड़ की गई। मैंने राज्यपाल सीवी आनंद बोस से बात की है और गृह मंत्री अमित शाह के कार्यालय से भी संपर्क किया है। सवाल यह है कि बंगाल में ऐसी घटनाएं बार.बार क्यों हो रही हैं। हमें शुक्रवार को हिंसा प्रभावित मोथाबाड़ी में जाने से रोका गया।

कर्नाटक में डिजिटल अरेस्ट बुजुर्ग दंपती ने की आत्महत्या

ठगों ने दिल्ली क्राइम ब्रांच का अधिकारी बन 50 लाख ठगे सुसाइड नोट से हुआ खुलासा

आर.एन.एस

नई दिल्ली। कर्नाटक के बेलगावी में एक बुजुर्ग दंपती ने डिजिटल अरेस्ट में 50 लाख रुपए की साइबर ठगी होने के बाद आत्महत्या कर ली। 83 साल के दियांगो नजारत ने गला काटकर जबकि उनकी पत्नी प्लेव्याना नजारत ने जहर खाकर खुदकुशी की। पुलिस के मुताबिक ठगों ने बुजुर्ग दंपती से वीडियो कॉल पर संपर्क किया और खुद को दिल्ली क्राइम ब्रांच के अधिकारी बताया।

उन्होंने दंपती को झूठे आपराधिक मामले में फंसाने की धमकी दी और डिजिटल अरेस्ट कर 50 लाख रुपए ठग लिए। बेलगावी के एसपी भीमाशंकर गुलेद ने बताया कि पुलिस बैंक खातों की जांच कर रही है और ठगों की ओर से वसूली गई कुल रकम का पता लगाया जा रहा है। यह एक गंभीर मामला है और इसकी जांच की जा रही है।

ठगों ने खुद को दिल्ली के टेलिकॉम विभाग और क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताकर बुजुर्ग दंपती को कॉल किया। उन्होंने दावा किया कि उनके नाम पर फर्जी सिम कार्ड जारी किया गया है। जो अवैध गतिविधियों में इस्तेमाल हो रहा है।

भाजपा कम से कम 30 साल तक सत्ता में रहेगी - अमित शाह

आर.एन.एस

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने विश्वास जताया है कि भारतीय जनता पार्टी भाजपा अपने लगातार अच्छे प्रदर्शन के कारण कम से कम 30 साल तक केंद्र में सत्ता में बनी रहेगी।शाह ने कहा कि लोकतंत्र में किसी भी पार्टी की जीत उसकी कड़ी मेहनत पर निर्भर करती है तथा यदि वह दिन, रात मेहनत करती है और ष्यदि आप अपने लिए नहीं बल्कि देश के लिए जीते हैं, तो जीत आपकी होगी।

उन्होंने शुक्रवार रात टाइम्स नाउ समिट 2025 में कहा ष्जब मैं भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष था तो मैंने कहा था कि भाजपा अगले 30 साल तक सत्ता में रहेगी। अभी तो केवल 10 साल ही बीते हैं। वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा कि जब कोई पार्टी अच्छा प्रदर्शन करती है, तो उसे जनता का भरोसा और जीतने का विश्वास मिलता है। उन्होंने कहा, ष्लेकिन जो अच्छा प्रदर्शन नहीं करते उनमें यह भरोसा नहीं होता। समान नागरिक संहिता, यूसीसीद्ध के बारे में पूछे जाने पर गृह मंत्री ने कहा कि भाजपा शासित सभी राज्यों में यूसीसी को एक.एक करके लागू किया जाएगा क्योंकि यह भाजपा के गठन के बाद से ही उसके प्रमुख एजेंडे में से एक रहा है। गृह मंत्री ने कहा कि अपनी स्थापना के बाद से ही भाजपा का संकल्प देश में समान नागरिक संहिता लागू करने का रहा है।

भाजपा की ऋण माफी से बैंकिंग सेक्टर को नुकसान, जनता भुगत रही खामियाजा - राहुल गांधी

आर.एन.एस

नई दिल्ली। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर आर्थिक कुप्रबंधन का आरोप लगाते हुए कहा कि अरबपति मित्रों के 16 लाख करोड़ रुपये के ऋण माफ कर दिए गए। जिससे बैंकिंग क्षेत्र में संकट पैदा हो गया।

शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में गांधी ने कहा भाजपा सरकार ने अपने अरबपति दोस्तों के 16 लाख करोड़ रुपये के कर्ज माफ कर दिए हैं। नियामक कुप्रबंधन के साथ.साथ भाई.भतीजावाद ने भारत के बैंकिंग क्षेत्र को संकट में डाल दिया है।

उन्होंने जूनियर बैंकिंग कर्मचारियों पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्हें कार्यस्थल पर तनाव और विषाक्त परिस्थितियों के कारण इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है।

संसद में उनसे मिलने वाले आईसीआईसीआई बैंक के 782 पूर्व कर्मचारियों के प्रतिनिधिमंडल का जिक्र करते हुए गांधी ने दावा किया कि उनके अनुभवों से उत्पीड़नए जबरन स्थानांतरण और अनैतिक ऋण देने की प्रथाओं को उजागर करने के लिए प्रतिशोध की बात सामने आई है।

उन्होंने कहा, उनकी कहानियों से एक परेशान करने वाला पैटर्न सामने आता है। कार्यस्थल पर उत्पीड़नए जबरन स्थानांतरण, एनपीए उल्लंघनकर्ताओं को अनैतिक ऋण देने का खुलासा करने के लिए प्रतिशोध, और उचित प्रक्रिया के बिना बर्खास्तगी। दो दुखद मामलों मेंए इसके कारण आत्महत्या हुई।

गांधी ने कहा कि यह मुद्दा आईसीआईसीआई बैंक तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे देशभर में कई बैंकिंग पेशेवर प्रभावित हुए हैं।

उन्होंने वित्तीय क्षेत्र से निपटने में भाजपा सरकार की भूमिका की आलोचना करते हुए कहा भाजपा सरकार के आर्थिक कुप्रबंधन की मानवीय कीमत चुकानी पड़ रही है। यह अत्यंत चिंता का विषय हैए जो देश भर में हजारों ईमानदार कामकाजी पेशेवरों को प्रभावित करता है।

कांग्रेस नेता ने इस मुद्दे को उठाने और कार्यस्थल पर उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया। उन्होंने लिखाए कांग्रेस पार्टी इन कामकाजी वर्ग के पेशेवरों के लिए न्याय की लड़ाई के लिए इस मुद्दे को पूरी गंभीरता से उठाएगी। इस बीचए लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी संभवतरू 7 अप्रैल को बिहार का दौरा करेंगे और पटना में श्संविधान सुरक्षा सम्मेलन में भाग लेंगे।

जयपुर में तेजाजी मंदिर में मूर्ति तोड़ने पर हंगामा, नारेबाजी कर रहे लोगों को पुलिस ने हटाया

आर.एन.एस

जयपुर। जयपुर में वीर तेजाजी मंदिर में मूर्ति क्षतिग्रस्त करने के विरोध में लोगों ने प्रदर्शन किया। सांगानेर थाना क्षेत्र में स्थित मंदिर के सामने लोगों ने करीब तीन घंटे टोंक रोड को जाम रखा। पुलिस अधिकारियों के समझाइश के बाद भी जाम नहीं खुला तो पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर लोगों को मौके से हटा दिया है।

दोपहर करीब डेढ़ बजे पुलिस ने जाम खुलवा दिया। इससे पहले शनिवार सुबह पुलिस को मंदिर की मूर्ति क्षतिग्रस्त होने की जानकारी मिली थी। स्थानीय लोगों ने बताया कि शुक्रवार रात करीब 3 बजे कुछ असामाजिक तत्वों ने मूर्ति तोड़ दी थी। आरोपियों से जुड़ा एक सीसीटीवी फुटेज भी शनिवार को सामने आया है।शनिवार सुबह करीब 10 बजे से लगे जाम को खुलवा लिया गया है। इस बीच अधिकारी लगातार प्रदर्शन करने वाले लोगों से समझाइश भी कर रहे हैं। हालांकिए फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है। वहीं घटना को लेकर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। फिलहालए पुलिस मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

हिमाचल में 2 पॉवर प्रॉजेक्ट लगाएगा तेलंगाना

400 और 120 मेगावाट के लिए दोनों राज्यों में एमओयू, 5 हजार लोगों को मिलेगा रोजगार

आर.एन.एस

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश ने शिमला में तेलंगाना सरकार के साथ लाहौल.स्पीति में स्थापित होने वाली 400 मेगावाट सेली और 120 मेगावाट मियार जल विद्युत परियोजनाओं के लिए समझौता ज्ञापन साइन किए। प्रदेश में पहली बार तेलंगाना सरकार पावर प्रोजेक्ट स्थापित करने जा रही है। इन पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और तेलंगाना के उप.मुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क मल्लू की मौजूदगी में हिमाचल सरकार की ओर से ऊर्जा सचिव राकेश कंवर तथा तेलंगाना सरकार की ओर से प्रधान सचिव ऊर्जा संदीप कुमार सुल्तानिया ने हस्ताक्षर किए। यह दोनों परियोजनाएं चिनाब नदी पर 6200 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से स्थापित की जाएगी।

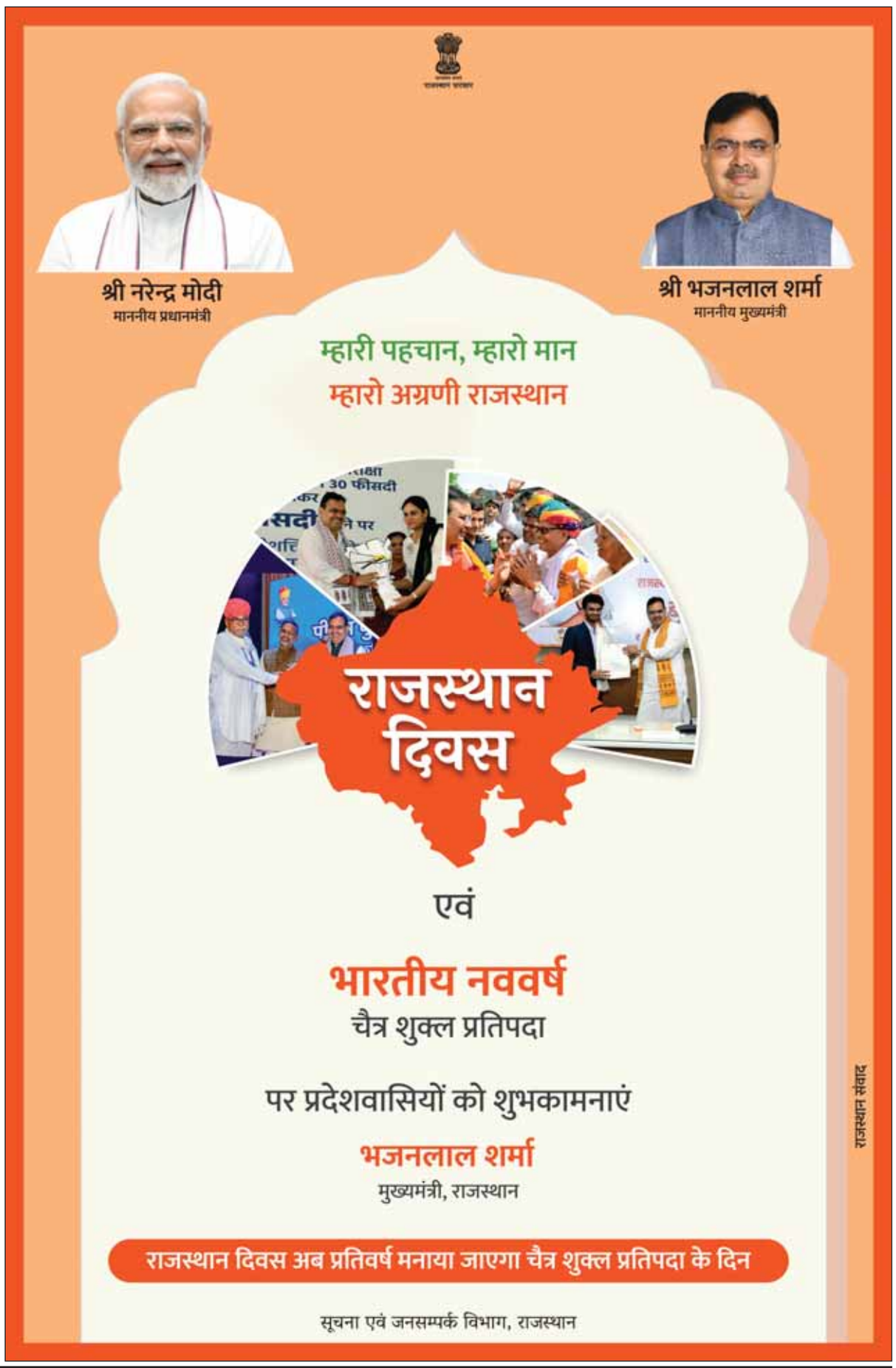

मरीजों को किया फल वितरण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

चाकसू। मंगलम ग्रुप के निदेशक राधेशरण खंडेलवाल एवं आकाश खंडेलवाल की ओर से हिन्दू नव वर्ष चैत्र शुक्ला एकम के उपलक्ष में चाकसू उप जिला अस्पताल में शनिवार को मरीजों को फल वितरण किया गया। इस मौके पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के उप निदेशक डॉ. रितुराज मीना के नेतृत्व में निदेशक खंडेलवाल एवं उनके साथियों ने ओपीडी, आईपीडी व प्रसूता वार्ड में मरीजों को फल वितरण किया गया। इस मौके पर उपनिदेशक मीना ने पीड़ित और मरीजों की सेवा सबसे बडा परोपकार है। इस दौरान निदेशक खंडेलवाल ने अस्पताल में भर्ती मरीजों की कुशलक्षेम भी पूछी। कार्यक्रम के दौरान अन्य लोग भी मौजूद रहे।

समवशरण से जिनबिम्ब लाकर पाँच पांडुकशिला पर इंद्रों द्वारा की गई शांतिधारा

पाँच बालयोगी मुनिराजों का मनाया दीक्षा दिवस, आज होगी जैनेश्वरी मुनि दीक्षा

समवशरण में विराजमान होकर विधान की धार्मिक क्रियाओं में संलग्न होना बड़े ही पुण्य का बन्ध करता है*- आचार्य वसुनंदी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

चाकसू। श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा में तीन दिवसीय त्रिकाल चौबीसी 72 समवशरण विधान का वृहद आयोजन अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान व पदम पुरा प्रबन्धकारिणी समिति के तत्वावधान में आयोजित हो रहे कार्यक्रम में द्वितीय दिवस चौबीस तीर्थंकरों की विशेष पूजा अर्चना की गई। इस अवसर पर 72 परिवारों द्वारा समवशरण में विराजमान होकर सातिशय पुण्य का अर्जन किया गया। इंद्रों द्वारा समवशरण से पाँच जिन बिम्ब लाकर पाँच पाण्डुशिला पर विराजित कर अभिषेक शांतिधारा से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ ।

इस अवसर पर आचार्य वसुनंदी महाराज ने कहा कि तीर्थंकर प्रभु सतत शांति को प्रदान करने वाले होते हैं। ऐसा नही है कि केवल ज्ञान की प्राप्ति उपरांत ही आत्मिक शांति प्रदान करते हैं अपितु प्रत्येक समय शांति को देने वाले होते हैं। सभी वो जीव जो किसी भी कल्याणक में पहुँच कर अनुमोदना करते हैं। आत्मिक सुख शांति को प्राप्त करते हैं। इस अवसर पर पाद प्रक्षालन व शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य शांति लाल ममता सौगानी परिवार जापान वालो को प्राप्त हुआ तो वही चित्र अनावरण वीरचन्द गजेंद्र जैन प्रवीण जैन बड़जात्या परिवार कामां वाले वैशाली नगर जयपुर को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर शशि जैन , भारतभूषण अजमेरा , सुनील बज , इंद्रा बडजात्या ,सुनील काला सहित जैन बैंकर्स फोरम के सदस्य उपस्थित रहे ।कार्यकम में उदयपुर , सलूम्बर, शाहदरा , जयपुर , रेनवाल , कुचामन , मुरैना , छुहारा , कामा, बस्सी , बसवा , आदि कई स्थानों के भक्त शामिल हुए ।

पंच मुनियों का दीक्षा दिवस

अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रान्त द्वारा आयोजित 72 समवसरण विधान के दौरान उपाध्याय प्रज्ञा नंद महाराज,मुनि श्रद्धा नंद महाराज,मुनि शिवा नंद महाराज मुनि प्रशमानंद महाराज,मुनि पवित्रानंद महाराज का ग्यारहवा मुनि दीक्षा दिवस भी आयोजित किया। धर्म जागृति संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या कामां ने बताया कि 29 मार्च 2015 को अंतिम अनुबद्ध केवली भगवान जम्बूस्वामी की तपोस्थली बोलखेड़ा में आचार्य वसुनंदी महाराज द्वारा दीक्षा प्रदान की गई थी। प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि इस अवसर पर आचार्य वसुनंदी महाराज ने कहा कि आज पँचरत्न की तरह पंच जीवो ने स्व पर कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया था। बाल ब्रह्मचारी बन जिन धर्म के मार्ग पर चलना निसन्देह चमत्कार है। अतिशय क्षेत्र उनकी साधना में अतिशय प्रकट करे यही मेरा मंगल आशिर्वाद है। प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार रविवार को विधान पूजन के अलावा दो जैनेश्वरी दीक्षाये होगी जिसमे एक मुनि दीक्षा होगी ।

संस्कृत विश्वविद्यालय का सातवां दीक्षांत समारोह 17 अप्रैल को

छात्रों को मिलेगी 6458 डिग्रियां

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय कर 7वां दीक्षांत समारोह 17 अप्रैल को होगा। कुलसचिव नरेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे की अध्यक्षता में दीक्षांत समारोह की तैयारियों को लेकर लगातार बैठकें हो रही हैं। राजस्थान कंवेंशन सेंटर में आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाउ किसनराव बागड़े 6458 डिग्रियां प्रदान करेंगे। इनमें शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शास्त्री और शिक्षा आचार्य के साथ ही विद्यावारिधि की उपाधियां शामिल हैं। विश्वविद्यालय प्रवक्ता शास्त्री कोसलेंद्रदास ने बताया कि समारोह में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला दीक्षांत भाषण प्रदान करेंगे और संस्कृत शिक्षा मंत्री मदन दिलावर समारोह में उपस्थित रहेंगे।

संस्कृत में तकनीकी का प्रभाव विषयक प्रश्नोत्तरी आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ ,शाहपुरा बाग एवं राजस्थान संस्कृत अकादमी , जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत में तकनीकी का प्रभाव विषयक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का आयोजन शनिवार को किया गया । विद्यापीठ प्राचार्य डॉ.मनीषा शर्मा ने बताया कि राजस्थान स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सात दिवसीय कार्यक्रमों की कडी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता वर्तमान में प्रशिक्षणार्थियों में राजस्थान के प्रति लगाव को जाग्रत करने के साथ देववाणी संस्कृत एवं राजस्थान की सभ्यता संस्कृति व तकनीकी के प्रभाव से अवगत कराने में ज्ञानवर्धक साबित होगी । राजस्थान संस्कृत अकादमी की निदेशक डॉ. लता श्रीमाली ने संस्कृत के उत्थान हेतु तकनीकी समन्वयन को प्रभावी बताते हुए सभी को राजस्थान स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी । उन्होंने कहा कि यह दिवस सद्भाव की हमारी संस्कृति को सहेज कर संकल्पित होकर राजस्थान के सर्वांगीण विकास में सभी की भागीदारी को सुनिश्चित करता है।

संस्था अध्यक्ष बृज किशोर शर्मा एवं सचिव डॉ. राजकुमार जोशी ने राजस्थान की गौरवमयी इतिहास, लोक परंपराओं और समृद्ध संस्कृति के लिए शुभकामनाएं देते हुए इस प्रयास की सराहना की । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए । प्रतियोगिता की समन्वयक संगीता शर्मा ने बताया कि प्रश्नोत्तरी में प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

गोकुल स्कूल में वेबसाइट का उद्घाटन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। गोकुल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मुरलीपुरा स्कीम ,जयपुर के प्रधानाचार्य आशा धाकड़ ने जानकारी दी कि 29 मार्च 2025 को स्थानीय विद्यालय की अभिभावक शिक्षक मीटिंग में गोकुल स्कूल की वेबसाइट www.gokulpublic-school.com का उद्घाटन मुख्य अतिथि अर्जुन लाल बुनकर , मुख्य मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ,झोटवाड़ा शहर ,जयपुर द्वारा किया गया इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बच्चू सिंह धाकड़ , प्रधानाचार्य, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय नगर, जयपुर ,संस्था के समस्त पदाधिकारी , सदस्य , अभिभावक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। इस वेबसाइट के द्वारा आप गोकुल स्कूल से संबंधित प्रवेश प्रक्रिया , संस्था के उद्देश्य ,संचालित गतिविधियों आदि की जानकारी विस्तार से प्राप्त कर सकते हैं। इंस्टाग्राम, फेसबुक, गूगल पर भी गोकुल स्कूल से संबंधित समस्त जानकारियां उपलब्ध है।

इस अवसर पर स्कूल द्वारा किए जा रहे जनकल्याण एवं सामाजिक उत्थान की गतिविधियों तथा शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे चौमुखी विकास तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास की सभी ने बहुत प्रशंसा की एवं अफॉर्डेबल शुल्क में बिना किसी भेदभाव के, सभी वर्गों के,सभी धर्म के, सभी सभी जातियों के परिवारों के बच्चों को योग्य, अनुभवी शिक्षकों द्वारा उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान की जा रही है ।

बियानी गर्ल्स कॉलेज में भव्य दीक्षांत समारोह सम्पन्न, विद्यार्थियों को मिली उपाधियाँ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। बियानी गर्ल्स कॉलेज एवं बियानी नर्सिंग कॉलेज का भव्य दीक्षांत समारोह हर्षोल्लास और गरिमापूर्ण माहौल में आयोजित किया गया। इस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही, जिन्होंने विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की ,उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। मुख्य अतिथि के रूप में आई. ए. एस श्री नीरज के. पवन (सेक्रेटरी ,युथ अफेयर्स एंड स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट) ने शिरकत की। प्रो. अनुराग शर्मा (निदेशक, पोद्दार इंस्टीट्यूट), प्रो. ओ. पी. शर्मा (विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान, राजस्थान विश्वविद्यालय), प्रो एवं सीए आर. सी. शर्मा (निदेशक, विद्या सागर इंस्टीट्यूट) भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस गरिमामयी अवसर पर बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस के चेयरमैन डॉ. राजीव बियानी, एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. संजय बियानी, प्राचार्य एवं डीन डॉ. ध्यान सिंह गोठवाल ने भी समारोह की शोभा बढ़ाई। एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. संजय बियानी ने अपने वेलकम एड्रेस में सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा अच्छे चरित्र निर्माण के साथ आगे बढ़ें और अपने ज्ञान से परिवार, समाज,और राष्ट्र का विकास करें ।पूरी ऊर्जा के साथ अपने लक्ष्य प्राप्त करने की कोशिश करें । आई. ए. एस श्री नीरज के. पवन ने सभी स्टूडेंट्स को अपने अनुभव के आधार पर कहा की जीवन में जो होता है हमेशा अच्छे के लिए ही होता है ,खुद पर भरोसा रखें जो करे, जहाँ करें , जैसा करें पूरा मन से करें जिस क्षेत्र में भी कार्य करें राष्ट्र को गौरव का क्षण दें । हमेशा उत्तरोत्तर आगे बढ़ते रहें और सीखना कभी बंद न करें। प्रो.ओ. पी. शर्मा ने विधार्थियो को शुभकामनाये देते हुए कहा की डिग्री का सदैव मान रखना चाहिए क्यूंकि इसी के दम पर हम अपना भविष्य तय करते हैं । इसीलिए जो लक्ष्य बनाया है उसमे लग जाएं जरूर सफलता मिलेगी । सीए आर. सी. शर्मा ने कहा की जब व्यक्ति में दृढ़ इच्छा होगी तब आप हमेशा आगे बढ़ते रहेंगे इसीलिए हिम्मत बनाए रखें ,सफल अवश्य होंगे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं और उन्हें भविष्य के लिए प्रोत्साहित किया गया साथ ही छात्रों को मेहनत, लगन और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी किया । कार्यक्रम के अंत में प्रिंसिपल एवं डीन डॉ. ध्यान सिंह गोठवाल ने कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए सभी स्टाफ मेंबर्स का धन्यवाद् ज्ञापित किया और इस शुभ दिवस पर अभिभावकों के योगदान की भी सराहना की । दीक्षांत समारोह में सभी विद्यार्थियों ने कॉलेज के अपने अनुभव को साझा करते हुए पुराने दिनों को याद किया, कॉलेज से मिली सीख की महत्वता बताई और टीचर्स का भी धन्यवाद् ज्ञापित किया।

ग्रेजुएशन सेरेमनी आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। रावत पब्लिक स्कूल,प्रताप नगर में एनुअल रिजल्ट डिक्लेरेशन डे के अवसर पर मांटेसरी से 9 और 11वीं तक के विद्यार्थियों का रिजल्ट घोषित किया गया। इस अवसर पर प्रेप क्लास के विद्यार्थियो के लिए ग्रेजुएशन सेरेमनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नन्हे मुन्ने विद्यार्थियो ने अपने पैरेंट्स के साथ कन्वोकेशन सेरेमनी में आकर सर्टिफिकेट प्राप्त किए। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों को विद्यालय पत्रिका निर्मला मैगजीन और रावत टाइम्स भी दिए गए। कार्यक्रम में रावत एजुकेशनल ग्रुप के निदेशक एवम अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी के सचिव नरेंद्र सिंह रावत ने विद्यार्थियों एवम उनके अभिभावकों को उनकी सफलता पर बधाई दी। रावत ने बताया कि विद्यालय द्वारा बच्चों के हॉलिस्टिक डेवलपमेंट के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं जिसमे सी बी एस ई द्वारा निर्देशित किए गए एनईपी 2020 के सभी मानदंडों को अपनाया जा रहा है। विद्यालय के एकेडमिक हेड राजेश कंथारिया ने प्राइमरी एजुकेशन में अपनाए जाने वाले नवाचारों के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या मैत्रेयी शुक्ला ने सभी का धन्यवाद दिया।

प्रबंधन छात्रों का महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज में दौरा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस/ जयपुर।

दीपशिखा कॉलेज के प्रबंधन विभाग के छात्रों ने महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज का शैक्षिक दौरा किया, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य उद्योग के नवीनतम विकास और प्रबंधन की भूमिका को समझना था। प्रबंधन विभाग के निदेशक डॉ. रुस्तम बोड़ा ने कहा, इस दौरे से छात्रों को हेल्थकेयर इंडस्ट्री की गहरी समझ मिलेगी और वे इस क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। दौरे के दौरान इंडियन हेल्थ सिस्टम पर क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें दीपशिखा कॉलेज के छात्रों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. तंजुल सक्सेना ने छात्रों को स्वास्थ्य उद्योग में प्रबंधन कौशल के महत्व के बारे में जानकारी दी।

मत्स्य जयंती एवं होली मिलन समारोह में विशाल कन्हैया दंगल का आयोजन आज

कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा करेंगे शिरकत

सवाई माधोपुर। मीना समाज सेवा संस्थान, सवाई माधोपुर के तत्वाधान में 30 मार्च रविवार को प्रातः 11 बजे मत्स्य जयंती एवं होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन होगा। इस विशेष अवसर पर आदरणीय डॉ. किरोड़ी लाल मीना (कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। मीणा समाज सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. बीएल मीणा ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन बालिका छात्रावास एवं लाइब्रेरी स्थल मेडिकल कॉलेज के पास ठींगला सवाई माधोपुर में किया जाएगा। कार्यक्रम में विशाल कन्हैया दंगल का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें कोशाली, उलियाणा बिच्छौदोना एवं श्यामपुरा सहित विभिन्न क्षेत्रों से आमंत्रित कन्हैया पार्टियां भाग लेंगी। उन्होंने इस कार्यक्रम में सर्वसमाज? से अधिक से अधिक संख्या में पधारने की अपील करते हुए कहा कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए मीणा समाज सेवा संस्थान के कार्यकर्ताओं द्वारा गांवों में जाकर कार्यक्रम में आने के लिए पीले चावल देकर निमंत्रण दिया गया है।

खंडार विधायक गोठवाल ने किया पोस्टर का विमोचन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

खंडार। खंडार विधायक जितेंद्र गोठवाल ने निजी आवास पर जनसुनवाई की एवं क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान संबंधित अधिकारी को कहकर निस्तारित किया इसी कड़ी में रामनवमी पर निकलने वाले जुलूस का पोस्टर का विमोचन भी विधायक द्वारा किया गया। खंडार विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने आज क्षेत्रीय दौरे के दौरान राजीव गांधी क्षेत्रीय प्राकृतिक संग्रहालय सभागार सवाई माधोपुर में आयोजित मुख्यमंत्री युवा सम्मेलन/रोजगार उत्सव समारोह में उपस्थित होकर माननीय मुख्यमंत्री महोदय के संबोधन को सुना व युवाओं को रोजगार हेतु जानकारी प्रदान की व उनका मनोबल बढ़ाया ।

बैठक आज

चाकसू। रामनवमी पर शोभायात्रा के आयोजन को लेकर रविवार शाम आदर्श विद्या मंदिर परिसर में सर्व समाज की एक बैठक का आयोजन किया जाएगा। बजरंगदल के केशव गौतम ने बताया कि बैठक के दौरान सामाजिक संगठनों, धार्मिक संगठनों सहित अन्य लोगों से व्यवस्थाओं को लेकर विचार विमर्श कर आयोजन की रूपरेखा बनाई जाएगी।

वीरभूमि की संस्कृति और परंपराओं का अभिनंदन : राजस्थान दिवस विशेष

राजस्थान का नाम सुनते ही मन में एक अद्भुत छवि उभरती है–सजे-धजे ऊंटों की सवारी, रंगीन परिधानों में सजे लोग, विशाल किले, सुनहरी रेगिस्तानी भूमि और लोकसंगीत की सुरमई ध्वनियां। यह प्रदेश न केवल अपनी स्थापत्य कला, लोक नृत्य और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी मिट्टी में वीरता और संस्कृति की ऐसी खुशबू बसी है, जो इसे पूरी दुनिया में अनूठा बनाती है। लोकगीतों में जहां श्रृंगार, भक्ति और वीर रस का समावेश है, वहीं लंगा और मांगणियार कलाकारों की धुनें मरुभूमि को संगीतमय बना देती हैं।

राजस्थान, जिसे पहले 'राजपूताना' के नाम से जाना जाता था, कई रियासतों और जागीरों का संगम रहा है। 30 मार्च 1949 को जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर सहित विभिन्न रियासतों के एकीकरण के साथ 'वृहत्तर राजस्थान संघ' की स्थापना हुई। इस ऐतिहासिक घटना को चिह्नित करने के लिए राजस्थान दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष, पहली बार यह उत्सव भारतीय परंपरा के अनुरूप चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की घोषणा के अनुसार, इस नई परंपरा की शुरुआत आज से हो रही है।

सांस्कृतिक झलकियों से सजा राजस्थान दिवस

राजस्थान दिवस को भव्य बनाने के लिए प्रदेशभर में 25 मार्च से ही विभिन्न आयोजन चल रहे हैं। बाड़मेर में महिला सम्मेलन से इसकी शुरुआत हुई, जहां 'लाड़ो प्रोत्साहन योजना' के तहत आर्थिक सहायता राशि वितरित की गई। वहीं, बीकानेर, भरतपुर, भीलवाड़ा और जयपुर सहित पूरे राज्य में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, विकास योजनाओं और लोक कलाओं से जुड़े

सिद्धार्थ जैन
पत्रकार व स्वतंत्र लेखन

आयोजन किए जा रहे हैं।

इतिहास के झरोखे से झांकता राजस्थान

राजस्थान का हर कोना इतिहास की गवाही देता है।

जयपुर (गुलाबी नगरी): स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण, जहां गोविंद देव जी मंदिर श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है। हवामहल, आमेर किला, जंतर-मंतर और सिटी पैलेस इसकी भव्यता को दर्शाते हैं।

अजमेर: ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर आध्यात्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

चित्तौड़गढ़: रानी पद्मिनी के बलिदान और मेवाड़ी शौर्य की मिसाल, जहां चित्तौड़ दुर्ग इतिहास के स्वर्णिम पन्नों को संजोए हुए है।

जोधपुर (सूर्य नगरी): मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन अपने भव्य स्थापत्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए मशहूर हैं।

जैसलमेर (स्वर्णनगरी): जैसलमेर का किला, पटवों की हवेली और सम के रेत के धोरे राजस्थान की शान हैं।

उदयपुर (झीलों की नगरी): पिछोला झील, सिटी पैलेस, सहेलियों की बाड़ी और फतेह सागर झील इस शहर की पहचान हैं।

कोटा: चंबल नदी के किनारे बसा यह शहर शिक्षा, उद्योगों और गढ़ पैलेस तथा चंबल गार्डन के लिए प्रसिद्ध है।

भरतपुर: केवलादेव घाना पक्षी अभयारण्य, जो पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है।

सवाई माधोपुर: रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, जो शेरों और वन्यजीवों के लिए प्रसिद्ध है।

बाड़मेर और जैसलमेर: लोक संस्कृति, संगीत और शिल्पकला के अद्भुत उदाहरण।

राजस्थान : एकता और विविधता का प्रतीक

राजस्थान की भूमि ने हर धर्म, हर परंपरा को आत्मसात किया है। यहां मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और गिरजाघर एक साथ सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल पेश करते हैं। 'पधारो म्हारे देश' की संस्कृति को अपनाते हुए यह प्रदेश अपने ऐतिहासिक महलों, हवेलियों और वन्यजीव अभयारण्यों के कारण दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित करता है।

खान-पान की अनूठी पहचान

राजस्थान के जायके भी उतने ही अद्भुत हैं, जितनी इसकी संस्कृति। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी, केर-सांगरी और घेवर जैसे व्यंजन इस भूमि की समृद्ध खान-पान परंपरा को दर्शाते हैं। राजस्थान दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि वीरभूमि के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और परंपराओं का उत्सव है। यह हमें अपने अतीत पर गर्व करने और भविष्य के समृद्ध राजस्थान के निर्माण का संकल्प लेने का अवसर देता है। आइए, इस अवसर पर अपने महान प्रदेश को नमन करें और इसकी अनमोल धरोहर को संजोने का प्रण लें!

जवाहर कला केन्द्र की अलंकार गैलरी में तीन दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर । राजस्थान दिवस समारोह के अवसर पर शासन सचिव पर्यटन, कला एवं संस्कृति रवि जैन ने शनिवार को जयपुर स्थित जवाहर कला केन्द्र की अलंकार गैलरी में तीन दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में सौ से अधिक आकर्षक छाया चित्रों के माध्यम से राजस्थान की कला, संस्कृति, महल, किले, बावड़िया, लोक जीवन, वन्य जीवन, तीज-त्यौहार, भोजन, पकवान एवं पहनावे को प्रदर्शित किया गया है।

रवि जैन ने बताया कि इस प्रदर्शनी में राजस्थान की प्रशासनिक सेवा के कई अधिकारियों द्वारा खींचे गए फोटोज प्रदर्शित किये गये हैं। जिनमें आईएएस डॉ. जीतेन्द्र सोनी, आईएफएस अरिजीत बैनर्जी, आईपीएस हेमंत शर्मा, आईपीएस सचिन मित्तल, के द्वारा खींचे गए फोटोज शामिल हैं। इसी के साथ कई फोटो जर्नलिस्ट, प्रोफेशनल फोटोग्राफर और स्टूडेंट्स फोटोग्राफर एवं कई डॉक्टर्स के द्वारा खींचे गए छाया चित्र प्रदर्शित किए गए। इस प्रदर्शनी को प्रसिद्ध फोटो जर्नलिस्ट संजय कुमावत ने क्यूरेट किया है।

प्रदर्शनी में कैमरे के माध्यम से दृश्य कहानियां प्रदर्शित की गई है। आगन्तुकों को आनंदित करने वाली इस अद्भुत फोटो प्रदर्शनी में आमजन भी शिरकत कर सकते है।

योजनाओं का लाभ वंचित व पात्र व्यक्तियों को दिलवायें- राज्यपाल बागडे

राज्यपाल ने ली जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक

योजनाओं कार्यों की प्रगति की ली जानकारी, दिये आवश्यक निर्देश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर/पाली। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि समाज के विंचत वर्ग व पात्र व्यक्तियों को सरकार की योजनाओं का लाभ मिले जिससे कि उनका जीवन खुशहाल हो सके अधिकारी इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करे।

राज्यपाल बागडे ने शनिवार को जिला परिषद के सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियो के साथ संवाद के दौरान राज्य व केंद्र प्रवर्तित योजनाओं एवं कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल देते हुए इनका लाभ आमजन तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

बैठक में उन्होंनें ग्रामीण विकास विभाग से महात्मा गांधी नरेगा योजना के तहत जॉब कार्ड एवं श्रमिक नियोजन, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) गांवों में सभी परिवारों तक व्यक्तिगत शौचालय की उपलब्धता , अनुसूचित क्षेत्र बाली के आदर्श ग्राम निर्माण कार्या की प्रगति, जनभागीदारी योजना, पीएमजीएवाई, सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग की 3 वर्षा में छात्रवृत्ति प्राप्त आवेदन व भुगतान, जल संग्रहण, अनुसूचित क्षेत्र में स्वय सहायता समूहों की स्थिति के बारे मे जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये। साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना में आवास स्थिति प्रगति , मुख्यमंत्री जिला नवाचार निधि योजना की प्रगति, पीएचईडी में जल जीवन मिशन हैंडपंप मरम्मत, टयूबवैल आदि, जल जीवन मिशन, सार्वजनिक निर्माण विभाग में बिपरजॉय, अटल पथ, उच्च स्तरीय पुल, बजट घोषण व अन्य कार्या के बारे में, बीसूका के विभिन्न कार्या की, मेडिकल विभाग में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, आयुष्मान कार्ड वितरण, मौसमी बीमारियां, क्षय उन्मूलन, मातृ स्वास्थ्य, टीकाकरण बांगड चिकित्सालय की सभी सुविधाओं, उपचार, उपलब्धता आदि की जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये।

इसी प्रकार जोधपुर विघुत वितरण निगम लिमिटेड में विघुत आपूर्ति, विभिन्न प्रकार के विघुत कनेक्शन की स्थिति , जल संसाधन विभाग में विभिन्न बाधों ,स्थिति और जल की वर्तमान स्थिति की, जिला उधोग केन्द्र में मुख्यमंत्री लघु उधोग प्रोत्साहन योजना, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम में आमजन को योजनाओं के लाभ की जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने रसद विभाग में खाध सुरक्षा योजनान्तर्गत पात्र परिवारो जिनमें ग्रामीण, शहरी राशन कार्डा उचित मूल्य की दुकानों के बारे में, एनएफएसए के आवेदन व गिव अप अभियान, कृषि विभाग व उधानिकी विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की जिनमें में उर्ववरक, फसलों, फार्म पाउंड से कराये आमजन को लाभान्वित कराने की समीक्षा की । इसी प्रकार पशुपालन विभाग में जिले की स्थिति व पशु चिकित्सा, गौशालाओं, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की समीक्षा करते हुए राज्यपाल ने कहा कि किसानों को मृदा संबंधी जांच के लिए लैब में सैंपल लाने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे उन्हें अपने खेत की मिट्टी के बारे में अधिक जानकारी होगी और उसके अनुसार फसलों का उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

इसके साथ ही अन्य विभागों जिनमे दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि दूध संकलन, विपणन, राजस्व, समितियों की जानकारी, महिला दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां आदि की जानकारी व सहकारिता विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता, न्यूनतम सर्मथन मूल्य पर खरीद 25.26 की जानकारी, शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं, मुख्यमंत्री बाल गोपाल दुध योजना निःशुल्क यूनिफार्म योजना, लाडो योजना, पीएम श्री विद्यालय की जानकारी, निःशुल्क साईकिल योजना, स्कूटी वितरण, टैबलेट वितरण, इसी प्रकार सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग की महिला एवं बाल विकास, यूआईटी, नगर निगम, श्रम विभाग, वन व पुलिस विभाग के कार्या व योजनाओं की प्रगति की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने राजीविका के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को आगे बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा करते हुए कहा कि राजीविका के तहत महिलाओं को विभिन्न ऋण योजनाओं से लाभान्वित करें और महिला सशक्तिकरण की दिशा में ऋण योजनाओं का बेहतर उपयोग किया जाए।

राणा सांगा पर की गई टिप्पणी को लेकर जताया रोष, उप राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

बाड़ी में यूथ फॉर नेशन फाउंडेशन ने किया प्रदर्शन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बाड़ी...विरोध प्रदर्शन करते यूथ के पदाधिकारी।

बाड़ी। राज्यसभा में सपा सांसद रामजीलाल सुमन द्वारा राणा सांगा पर की गई टिप्पणी को लेकर आज शहर में यूथ फाउंडेशन संगठन द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। शहर के मुख्य मार्ग से रैली निकालकर जुलूस के रूप में युवा एसडीएम कार्यालय पहुंचे। जहां सपा सांसद का पुतला जलाया गया साथ में उपराष्ट्रपति जगदीश धनकर के नाम उपखंड अधिकारी भगवत शरण त्यागी को ज्ञापन सोपा गया। यूथ फॉर नेशन के जिला अध्यक्ष देव पाराशर ने बताया कि देश की आन,बान,शान के प्रतीक राजस्थान के वीर योद्धा राणा सांगा पर सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने 21 मार्च को राज्यसभा में जो टिप्पणी की है। वह किसी भी दृष्टि में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस टिपणी का युवाओं में विरोध है और सभी युवा मांग करते हैं की देश के उपराष्ट्रपति एवं राज्यसभा के अध्यक्ष जगदीश धनखड़ उन्हें तुरंत उनकी सदस्यता से बर्खास्त करें। अगर कार्रवाई नहीं हुई तो देश का युवा सड़कों पर होगा। राणा सांगा जैसे महान देशभक्त पर इस प्रकार का अनर्गल आरोप बर्दाश्त के काबिल नहीं है। अगर कार्रवाई नहीं होती है तो युवा सड़कों पर उतरेंगे और विरोध प्रदर्शन के साथ आंदोलन किया जाएगा। इस दौरान उपराष्ट्रपति के नाम एसडीएम को ज्ञापन सोपा गया। विरोध प्रदर्शन में आर्यन राय, संजू शर्मा, हंसवीर, विवेक शर्मा, रामकुमार शर्मा, कान्हा परमार, यीशु ठाकुर, जतिन शर्मा, राज तोमर एवं अन्य युवा मौजूद रहे।

तीन अलग-अलग स्थानों से अवैध पत्थर की भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त, दो गिरफ्तार

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बाड़ी.. पुलिस की गिरफ्त में आरोपी।

बाड़ी। उपखंड की सदर थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए विशेष अरावली संरक्षण अभियान में तीन स्थानों से अवैध पत्थर से भरी तीन ट्रैक्टर-ट्रालियों को जप्त किया है। साथ में दो आरोपी पुलिस के हाथ लगे हैं। एक आरोपी ट्रैक्टर-ट्राली को छोड़कर मौके से भागने में कामयाब रहा है। पुलिस ने तीनों ट्रैक्टर-ट्रालीयो को जप्त कर लिया है। गिरफ्त में आए आरोपियों के खिलाफ वन्य संरक्षण अधिनियम की विभिन्न धाराओं में कार्रवाई की जा रही है। सदर थाना अधिकारी विनोद कुमार ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक सुमित महरेड़ा के निर्देश पर एडिशनल एसपी कमल कुमार जागिड़ और बाड़ी सीओ महेंद्र कुमार के सुपरविजन में मुखबिर की सूचना मिलने पर कार्रवाई की गई है। पुलिस के हेड कांस्टेबल हल्केराम,हेड कांस्टेबल कलेक्टर सिंह,कांस्टेबल लोकेंद्र,रामअवतार एवं अन्य जवानों के सहयोग से पहली कार्रवाई सदर थाना क्षेत्र के बसेड़ी रोड स्थित कोल्ड के पास की गई। जहां से अवैध पत्थर ट्रैक्टर-ट्राली को लेकर जाते आरोपी लोकेश पुत्र लक्ष्मण गुर्जर निवासी गजनुआ थाना गढ़ी बाजना भरतपुर को गिरफ्त में लिया है। वहीं दूसरी कार्रवाई थाना क्षेत्र के खानपुर तिराहे पर की गई। जहां से आरोपी अजय सिंह पुत्र भगवान सिंह गुर्जर निवासी माँगरेल थाना गढ़ी बाजना भरतपुर को गिरफ्त में लिया है। जिससे एक पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्राली जप्त की है। तीसरी कार्रवाई देवनारायण हॉस्टल के पास धौलपुर रोड पर की गई। जहां से भी एक अवैध पत्थर ट्रैक्टर -ट्राली पुलिस ने जप्त की है। आरोपी पुलिस को देखकर भागने में कामयाब रहा है। दोनों आरोपियों के खिलाफ पुलिस द्वारा वन्य जीव संरक्षण अधिनियम की विभिन्न धाराओं और फॉरेस्ट एक्ट में कार्रवाई की जा रही है।

बसेड़ी में गणगौर मेला कल, ईश्वर-गणगौर के साथ देवी-देवताओं की निकलेगी दो दर्जन झांकियां

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बसेड़ी. बैठक में उपस्थित कमेटी के कार्यकर्ता।

बसेड़ी। कस्बे में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गणगौर मेले का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाएगा। श्री गणगौर मेले के आयोजन को लेकर मेला कमेटी की ओर से बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वसमाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए।इस दौरान पूर्व की मेला आयोजन कमेटी को ही सर्वसम्मति से फिर से मेले के आयोजन के लिए सहमति दी गई।

मेला संयोजक रायसिंह परमार ने बताया कि कस्बे के सर्व समाज की श्री गणगौर मेला ऐतिहासिक धरोहर है इस ऐतिहासिक धरोहर को हम सबको मिलकर संभाल कर रखने की जरूरत है उन्होंने आह्वान किया कि आगामी 31 मार्च सोमवार को आयोजित मेले को सफल बनाने में सर्व समाज के लोग सहयोग प्रदान करे। बैठक की अध्यक्षता कर रहे हैं गणगौर मेला कमेटी के अध्यक्ष मायाराम शर्मा ने कहा कि गणगौर मेला हमारे समाज के भाईचारे को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है उन्होंने खासतौर से सभी समाजों के युवाओं से आह्वान किया कि युवा मेले को सफल बनाने में अपना सहयोग दे।

मेला कमेटी अध्यक्ष मायाराम शर्मा ने बताया कि गणगौर मेला में झांकियां धूमधाम से निकाली जाएगी। जिसमे देवीमाता, गणगौर माता सहित करीब दो दर्जन से अधिक झांकीया शामिल होगी। गणगौर मेले को लेकर मेला कमेटी द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए निर्णयानुसार 31 मार्च को गणगौर मेला शोभायात्रा की शुरुआत शाम 7 बजे कस्बे के नयावास मोहल्ले से भैरों बाबा के मंदिर से पूजा अर्चना के बाद होगी। जो कस्बे के सर्राफा बजार, सदर बाजार, पीपल मंडी, स्टेशन रोड गंज, तिमासिया में पहुंचेगा। जहां शेर पर सवार माताराणी की ओर से स्टेशन के समीप दानव दहन के साथ मेले का समापन होगा। मेले की तैयारियों को लेकर सभी सदस्यों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई है।

राजाखेड़ा तहसील परिसर के शौचालय की खराब स्थिति

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। राजाखेड़ा तहसील परिसर में स्थित शौचालय की हालत बदतर हो चुकी है। दीवारों पर जमी गंदगी, टूटी-फूटी संरचना और हर ओर फैली दुर्गंध से यह स्पष्ट है कि प्रशासन ने स्वच्छता की ओर से आंखें मूंद रखी हैं। शौचालय में न तो नियमित सफाई हो रही है और न ही मरम्मत की कोई व्यवस्था है। नल और दरवाजे जर्जर हो चुके हैं, जिससे आमजन और तहसील कर्मचारियों को भारी असुविधा हो रही है। गंदगी और सीलन के कारण बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है।स्थानीय नागरिकों का कहना है कि कई बार अधिकारियों को शिकायत देने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। मजबूरी में लोग खुले में शौच और पेशाब करने को विवश हो रहे हैं, जिससे स्वच्छता प्रभावित हो रही है। तहसील परिसर में रोजाना सैकड़ों लोग आते हैं, लेकिन शौचालय की दुर्दशा ने नागरिकों को परेशानी में डाल दिया है। स्वच्छता अभियान के दावों के बावजूद प्रशासन की अनदेखी साफ नजर आ रही है। लोगों ने प्रशासन से जल्द से जल्द शौचालय की सफाई, मरम्मत और नियमित देखरेख की मांग की है।

राजस्थान पंचायती राज अतिरिक्त एवं सहायक विकास अधिकारी संघ ने प्रभारी मंत्री को सौंपा ज्ञापन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर.. प्रभारी को ज्ञापन देते संघ के पदाधिकारी।

धौलपुर। राजस्थान पंचायती राज अतिरिक्त एवं सहायक विकास अधिकारी संघ जिला शाखा के जिलाध्यक्ष रामभारत सिंह के नेतृत्व में जिला कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा जवाहर सिंह बेढम मंत्री राजस्थान सरकार गृह राज्य पशुपालन डेयरी मत्स्य एवं गोपालन विभाग को संगठन के मांग पत्र के संबंध में ज्ञापन दिया गया। संगठन द्वारा पंचायती राज विभाग के मंत्री तथा शासन सचिव एवं अन्य सक्षम स्तर को समय-समय पर संगठन का मांग पत्र व ज्ञापन प्रस्तुत किए गए हैं किंतु संवर्ग की जायज मांगों एवं समस्याओं के निराकरण के लिए विभाग स्तर पर आज दिनांक तक का कोई द्विपक्षीय वार्ता या उचित समाधान नहीं किया गया है , जिससे संगठन के सदस्यों में असंतोष व्याप्त है। विकास अधिकारी के रिक्त पद का अतिरिक्त कार्यभार दिए जाने के शासकीय परिपत्रों के बावजूद विभागीय परिपत्र 25 मार्च 2025 के द्वारा अनायास अकारण ही विकास अधिकारी के रिक्त पद का कार्यभार की वरीयता से सहायक विकास अधिकारी को विलुप्त किया गया है। जिससे संवर्ग के सदस्यों में घोर आक्रोश की स्थिति उत्पन्न हो गई है। विकास अधिकारी के रिक्त पद का अतिरिक्त कार्यभार प्रदान किए जाने के परिपत्र की वरीयता में सहायक विकास अधिकारी को पूर्ववत स्थान पर रखे जाने के लिए संशोधित आदेश जारी करवाने हेतु आग्रह किया गया। इस मौके पर जिला कार्यकारिणी के सदस्य रविंद्र सिंह राना, प्रताप सिंह चौहान ,प्रमोद शर्मा, रघुवंश कुमार, शिवदत्त गोस्वामी, होतमसिंह व सुनील कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों की पात्रता की जांच की प्रक्रिया के संबंध में सौंपे ज्ञापन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर...ज्ञापन सौंपते हुए।

धौलपुर। ग्राम विकास अधिकारी संगठन द्वारा प्रदेश स्तर के आह्वान पर समस्त उप शाखा एवं जिले पर समस्याओं को लेकर ज्ञापन दिए गए है। इसी क्रम में जिलाध्यक्ष श्रीभानसिंह गुर्जर के नेतृत्व में मंत्री एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास विभाग के नाम मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद के माध्यम से ज्ञापन दिया गया है। उप शाखा स्तर पर विकास अधिकारी के माध्यम से ब्लॉक अध्यक्षों के नेतृत्व में ज्ञापन दिए। ज्ञापन में बताया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों की पात्रता एवं अपात्रता की जांच के लिए संबंधित विभागों तथा परिवहन विभाग राजस्व विभाग तथा आयकर विभाग के सक्षम अधिकारियों को निर्देशित कर पात्रता की जांच के उनसे संबंधित बिंदुओं की आवश्यक सूचना उपलब्ध करवाई जाये। इसके साथ ही पात्रता के 10 मापदंडों के संबंध में लाभार्थी से 100 के स्टांप पर नोटरी अटेस्टेड शपथ पत्र दिया जाना अनिवार्य किया जाये तथा तथ्य छुपा कर गलत लाभ लेने पर भविष्य में जांच में प्रमाणित पाए जाने पर लाभार्थी से ही शत-प्रतिशत राशि की वसूली के स्पष्ट दिशा निर्देश जारी किया जाये। इस अवसर पर प्रदेश मंत्री कृष्ण कुमार तोमर, महेश सोनी, रामलखन मीणा, बसंत लाल मीणा, रिंकू त्यागी, रामकिशन गुर्जर सहित सभी ब्लॉक अध्यक्ष, ब्लॉक मंत्री और ग्राम विकास अधिकारी उपस्थित रहे।

आशा सहयोगिनी सुआबाई को सेवानिवृत्त पर दी विदाई

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मरैना हॉस्पिटल में जिला आशा कर्मचारी संघ की जिला अध्यक्ष सुमन शर्मा के नेतृत्व में सेवानिवृति समारोह का आयोजन किया गया। आशा सहयोगिनी सुआ बाई शर्मा को विदाई दी गई। आशा सुआ बाई शर्मा ने बताया मैंने अपने घर के साथ-साथ अपने गांव फरसपुरा में 2004 से सेवा दे रही हूं जिनमें हम छोटे बच्चों और गर्भवती महिलाओं की देखभाल करती हैं। डॉ. मीना ने कहा आशा स्वास्थ्य विभाग की रीढ़ की हड्डी होती है जो स्वास्थ्य विभाग की योजना घर-घर तक पहुंचाती हैं। आशा सुमन शर्मा ने कहा आज हमारी आशा बहिन सुआ बाई शर्मा को सेवाभाव के बदले सेवा से मुक्ति मिल रही हैं। हम सरकार से मांग करते है हम आशा बहनों को सेवानिवृति पर सरकार को हमें फंड और पेंशन देनी चाहिए। जिससे वृद्धावस्था में सहारा मिल सके। इस मौके पर्व उपस्थित लोगों में सीमा शर्मा, ब्रजेश, नीलम, सुपरवाइजर राजेश, आशा, सुमन शर्मा अतरौली, रेखा, इशरत खान, मीना, मीरा, आशीष, पवन तिवारी इत्यादि लोग मौजूद रहे।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत का राजस्थान भवन में स्वागत

जयपुर। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत का हेमंत कांत विनय, शशि कांत शर्मा, सजना भामू और ममता राठौड़ ने मुंबई के राजस्थान भवन में स्वागत किया। यह स्वागत आचार्य देवव्रत के नेतृत्व और गुजरात राज्य के लिए उनके योगदान के प्रति सम्मान और प्रशंसा को दर्शाता है। आचार्य देवव्रत, एक प्रसिद्ध आर्य समाज प्रचारक और शिक्षाविद्, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में कार्यरत रहे हैं। वर्तमान में गुजरात के 20वें राज्यपाल हैं।

चक्रवर्ती सम्राट राजा विक्रमादित्य परमार की जयंती पर होगा जनसभा का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। रविवार को धौलपुर जिले के सैंपऊ क्षेत्र के राजौरा खुर्द में क्षत्रिय युवा एकता राजस्थान सामाजिक संगठन के द्वारा हिंदू सम्राट चक्रवर्ती राजा वीर विक्रमादित्य परमार के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य जनसभा का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें धौलपुर जिले के साथ-साथ पड़ोसी जिले के युवा साथी भी सम्मिलित होंगे। जिसमें उत्तर प्रदेश वह मध्य प्रदेश की जानी-मानी राजपूत हस्तियां भी सम्मिलित होने की संभावना है। जिनमें डॉ.रामकेश सिंह परमार, पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार गिर्राज सिंह मलिंगा, डॉ आर पी सिंह परमार, अध्यक्ष जिला पंचायत आगरा मंजू भदोरिया, डॉ राजेंद्र सिंह पूर्व विधायक फतेहाबाद, विकास परमार खेरागढ़, राजा भैया धौलपुर, पूर्व प्रधान मोनू जादौन, के उपस्थित होने की संभावना है क्षत्रिय युवा एकता राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष कृष्णा परमार सैंपऊ ने बताया कि इस कार्यक्रम को लेकर हमारे संगठन एवं राजपूत समाज के सभी युवा बहुत ही उत्साहित हैं और हमें आशा है की विक्रमादित्य के जन्मोत्सव का यह कार्यक्रम एक एतिहासिक कार्यक्रम होगा और बताया उन्होंने इस कार्यक्रम को लेकर हमारे कार्यकर्ता प्रेम सिंह परमार, शैलेंद्र सिंह परमार, हरवीर सिंह राजपूताना, रामप्रवेश सिंह परमार, गौलेश चौहान, सत्यवान तोमर, हितेंद्र सिंह तोमर, नितिन परमार काफी उत्साहित और मेहनत से कार्य कर रहे हैं उनकी मेहनत अवश्य सफल होगी। मैं राजपूत समाज के लोगों से निवेदन करूंगा। इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाए कार्यक्रम स्थल भरतपुर रोड राजोरा खुर्द सैंपऊ कार्यक्रम समय दोपहर 12 बजे।

आम सूचना

मैं शोभाबाई किन्नर पुत्री गुरुचरनी निवासी जाटव बस्ती मदीना कॉलोनी धौलपुर राज. आधार नं. 253512600581 है कि मैं शपथ पूर्वक सहीं बयान करती हूं कि यह कि मैंने विरेव पुत्र डेबिड जाति जाटव निवासी फूटा दरवाजा पुराना शहर धौलपुर को गोद लिया था कि अब विरेब की आदतें खराब हो गयी हैं और आये दिन शराब पीकर लड़ाई झगड़ा करता है, नशे करता है, जुआ खेलता है, लड़ाई झगड़ा करता है। मेरी कोई बात नहीं मानता है। जिसके शराबी व्यवहार व उक्त आदतों को देखते हुए मैं विरेब पुत्र डेबिड को अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं कि आज के बाद विरेब से मेरा कोई संबंध सरोकार नहीं रहेगा और विरेब द्वारा कोई भी कृत्य किया जाता है जिसके लिए वह ही जिम्मेदार रहेगा। उससे मेरा कोई लेन देन नहीं रहेगा। शपथ पत्र मैंने अपने पूर्ण होश हवास में स्वस्थ्य चित्त बुद्धि की अवस्थ में लिख दीना जो कि सनद रहे वक्त समय पर काम आवे।

हस्ताक्षर शपथकर्ता
शोभाबाई

सपा सांसद के बयान पर भड़कीं पूर्व विधायिका मनोरमा सिंह, कहा कि वीरों के बलिदान को नहीं भुला सकता देश

राजाखेड़ा। समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन के 16वीं सदी के राजपूत शासक राणा सांगा को गद्दार कहने वाले बयान पर विवाद बढ़ता जा रहा है।राजस्थान के राजाखेड़ा की पूर्व विधायिका मनोरमा सिंह ने इस बयान की कड़ी निंदा करते हुए इसे वीरों के बलिदान का अपमान बताया है। पूर्व विधायिका मनोरमा सिंह ने वीरों को समर्पित कविता जारी कर कहा कि राणा सांगा केवल राजपूत समाज के ही नहीं, बल्कि हर वर्ग के लिए पूजनीय हैं।उन्होंने कहा कि राजस्थान में पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी देश और समाज के लिए बलिदान दिया है,जिसे कोई नहीं भुला सकता। सांसद बोले– माफी नहीं मागूंगा। वहीं सांसद रामजी लाल सुमन अपने बयान पर कायम हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने केवल ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत किए हैं और किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का उनका कोई उद्देश्य नहीं था। इस विवाद के बाद राजस्थान में कई सामाजिक संगठनों और नेताओं ने भी राणा सांगा के सम्मान में आवाज उठाई है। सोशल मीडिया पर भी लोग सांसद के बयान का विरोध कर रहे हैं और उनसे माफी की मांग कर रहे हैं।

युवा कुश राठौर की पहल से नेत्रहीन सुनील को मिली पेंशन बहाली की राह

राजाखेड़ा। नेत्रहीन सुनील की सामाजिक सुरक्षा पेंशन कई महीनों से रुकी हुई थी। प्रणालीगत दिक्कत के कारण वे प्रशासनिक कार्यालयों के चक्कर काट रहे थे। सही समाधान की राह ना मिलने पर वे निराश होकर एक दुकान के पास बैठ गए, जहां उनकी मुलाकात युवा कुश राठौर से हुई। कुश राठौर ने उनकी परेशानी समझकर बुद्धिमत्ता और तत्परता से तुरंत ई-मित्र केंद्र पर पेंशन स्थिति की जांच करवाई। पता चला कि उनके जनाधार कार्ड से विकलांगता प्रमाणपत्र लिंक नहीं था और उनके पास अनिवार्य यूडीआईडी कार्ड नहीं था। कुश ने तत्परता दिखाते हुए सुनील का यूडीआईडी कार्ड ऑनलाइन पंजीकरण कराया और उनकी फाइल संबंधित विभाग तक पहुंची।लगभग डेढ़ महीने में उनका नया यूडीआईडी कार्ड बन गया,जिससे पेंशन बहाली की प्रक्रिया आगे बढ़ सकी। यूडीआईडी कार्ड मिलने पर सुनील के चेहरे पर मुस्कान लौट आई। संवेदनशीलता और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में तत्परता के महत्व को दर्शाती है।

संपादकीय

जम्मू-कश्मीर में कब थमेगा आतंक का खूनी सिलसिला? घुसपैठ, मुठभेड़ और शहादतों का दौर जारी

जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन खत्म होने के बाद जब लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार ने काम करना शुरू किया था, तब उससे उपजी एक उम्मीद यह भी थी कि अब वहां नए सिरे से आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई शुरू होगी। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खात्मे के लिए देश और इसके समूचे तंत्र की कितनी ऊर्जा लगी है, यह सभी जानते हैं। विडंबना यह है कि दशकों पहले से जारी इस समस्या से पार पाने के लिए सरकारों ने दावे तो बहुत किए, वक्त के साथ नए उपाय भी किए गए, लेकिन आज भी वहां जिस स्तर की आतंकवादी गतिविधियां चल रही दिखती हैं, वह देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। गौरतलब है कि हाल ही में सुरक्षा बलों को यह खबर मिली थी कि पाकिस्तान से संचालित आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के कुछ सदस्य घुसपैठ कर कठुआ के जंगलों में छिप गए हैं। उन्हीं आतंकवादियों की तलाश में जम्मू-कश्मीर की पुलिस की अगुवाई में अभियान चलाया जा रहा था। इस बीच गुरुवार की सुबह पुलिस बल ने आतंकियों के एक समूह को घेर लिया। इसके बाद हुई मुठभेड़ में सुरक्षा बलों ने तीन आतंकियों को मार गिराया, लेकिन इस क्रम में तीन पुलिसकर्मी भी शहीद हो गए और सेना के दो जवानों सहित सात अन्य घायल हो गए। इसमें कोई दोराय नहीं कि जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बल और वहां की पुलिस ने आतंकियों से मोर्चा लेने के मामले में हमेशा ही सजगता बरती है और इसमें उन्हें काफी हद तक कामयाबी मिली है। मगर यह भी कड़वी हकीकत है कि आज भी वहां आतंकवादी संगठन इस रूप में अपनी मौजूदगी बनाए हुए हैं कि वे सुरक्षा बलों के शिविरों पर हमला कर देते हैं और कई बार उनकी जान भी चली जाती है। सुरक्षा बलों या किसी पुलिसकर्मी की शहादत की घटना दरअसल यह विचार करने की जरूरत को रेखांकित करती है कि आतंकियों से निपटने की रणनीति में क्या किसी बदलाव की जरूरत है! क्या इस समस्या की तहों में जाना अब भी बाकी है? जम्मू-कश्मीर में इतने लंबे समय तक प्रकारांतर से केंद्र सरकार का शासन रहा, सुरक्षा बलों की ओर से हर स्तर पर सावधानी और सख्ती बरती गई, अक्सर मुठभेड़ों में आतंकियों को मार गिराने में कामयाबी मिली, उसके बावजूद यह समझना मुश्किल है कि आज भी आतंकियों के हौसले में कमी क्यों नहीं आ पा रही है। क्या यह उनके आतंकी तंत्र के मजबूत संजाल और सीमापार से परोक्ष सहयोग के बूते हो रहा है या फिर कहीं किसी स्तर पर उनके पांव को राज्य से उखाड़ने के प्रति और ज्यादा सख्ती और गंभीरता की जरूरत है? जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन खत्म होने के बाद जब लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार ने काम करना शुरू किया था, तब उससे उपजी एक उम्मीद यह भी थी कि अब वहां नए सिरे से आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई शुरू होगी। मगर अब भी वहां सरकार के कामकाज का कोई ऐसा ठोस असर सामने नहीं आया है, जिससे आतंकियों के हौसले पस्त हों। वरना क्या वजह है कि हर स्तर पर निगरानी या चौकसी के बावजूद आए दिन आतंकी संगठन सुरक्षा बलों पर हमले कर देते हैं और उसमें कई जवान शहीद हो जाते हैं। केंद्र सरकार यह दावा जरूर करती है कि पिछले कुछ समय में जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद में कमी आई है, मगर अक्सर सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ, उनसे सुरक्षा बलों की मुठभेड़, कुछ आतंकियों के मारे जाने के साथ-साथ सेना या पुलिस के जवानों की शहादत से यही लगता है कि वहां इस समस्या की जड़ें कायम हैं और शांति फिलहाल दूर की कौड़ी है। बल्कि पिछले कुछ वर्षों में आतंकियों के लक्षित हमलों में प्रवासी मजदूरों के मारे जाने की घटनाओं ने हालात के और जटिल होने को रेखांकित किया है।

खेलिए, कूदिए, हंसिए 'किडल्टिंग' से लौट रही मासूम खुशियां

अतीत हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। बचपन की स्मृतियों की ओर बार-बार मुड़ जाना हमें अच्छा लगता है। छूट गई चीजों से मोह उमड़ना इंसानी फितरत है। जब बचपन का घर, गांव, शहर, देश छूट जाता है तो व्यक्ति जीवन में एक बार उस शहर, देश गांव में जरूर लौटना चाहता है। इसी तरह बचपन के खेल-खिलौनों को देखकर उसके भीतर का बच्चा कुलबुला उठता है।

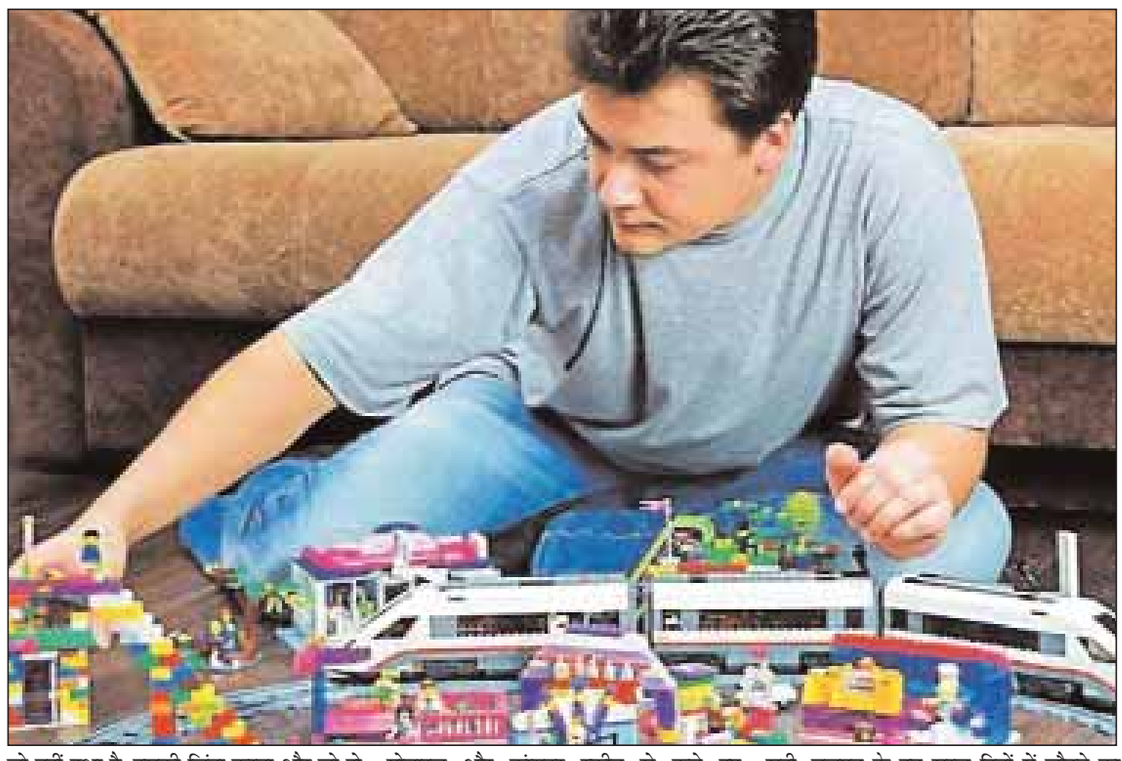

वर्तमान जिंदगी में तमाम सुविधाओं के बीच रहने वाले लोग भी अब ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, जिसमें वे जीवन की संवेदनाओं का अहसास नहीं कर पाते! जो इसकी वजहें ढूंढ़ पाने और उसके समाधान की ओर साहस के साथ देखने की कोशिश करते हैं, वे अपने बचपन की दुनिया में मौजूद जीवन-तत्त्व में इसका हल खोजते हैं।

अतीत हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। बचपन की स्मृतियों की ओर बार-बार मुड़ जाना हमें अच्छा लगता है। छूट गई चीजों से मोह उमड़ना इंसानी फितरत है। जब बचपन का घर, गांव, शहर, देश छूट जाता है तो व्यक्ति जीवन में एक बार उस शहर, देश गांव में जरूर लौटना चाहता है। इसी तरह बचपन के खेल-खिलौनों को देखकर उसके भीतर का बच्चा कुलबुला उठता है। तितलियों के पीछे भागना, पानी में छपाक-छपाक कूदना, गुड़िया-गुड्डों से खेलना जैसी बातों की स्मृति उसे आनंद से भर देती है। बचपन के इस आकर्षण को बुढ़ापे में जीने के लिए दुनिया में एक नया चलन चला है, जिसे 'किडल्टिंग' नाम दिया गया है। इसके जरिए दुनिया भर में कई युवा, अधेड़ और बुजुर्ग महिलाएं, पुरुष वह सब कर रहे है जो बचपन में करना उन्हें पसंद था, या जवानी में समय के अभाव के कारण वे कर नहीं पाए। 'किडल्टिंग' शब्द दो शब्दों के मेल से बना हुआ है- 'किड' और 'एडल्ट'। यानी बचपन और वयस्क की संधि। मनोवैज्ञानिक कार्ला मैरी मैनली के अनुसार, 'व्यावहारिक रूप से देखें तो यह बचपन की जानी-पहचानी, अच्छी लगने वाली गतिविधियों की ओर एक स्वाभाविक, सरल वापसी है।' मतलब बचपन में जिस लुका-छिपी के खेल को खेलकर हम रोमांच से भर उठते थे, उसी रोमांच को फिर से बुढ़ापे में खेलकर यह महसूस करने की कोशिश है। 'किडल्ट' शब्द का इस्तेमाल पिछले कुछ वर्षों से हो रहा है, लेकिन इस चलन की लोकप्रियता में वास्तविक उछाल कोविड महामारी के शुरुआती महीनों में आया, जब सब अपने-अपने घरों में बंद पड़े भय और अवसाद से जूझ रहे थे। इस भय और निराशा को कम करने के लिए कुछ लोगों ने नए शौक पाले तो कुछ अपने पुराने बिछड़े शौक की ओर लौट आए। जब महामारी का भय कम हुआ, तब भी वयस्कों ने ऐसी गतिविधियां जारी रखीं। मतलब बचपन के शौक से जीवन में आए उत्साह को बनाए रखा। जब हम अपना मनपसंद काम करते हैं तो जीवन की चिंताओं से बेफिक्र हो जीते हैं। जो नहीं हुआ है, उसकी चिंता करना और जो हो गया है, उसकी भी चिंता करना हमारा स्वभाव होता है। इन चिंताओं के चलते हम जीवन के उल्लास से लगभग महरूम हो जा रहे हैं। 'किडल्टिंग' जिंदगी के भागमभाग में फंसे, अकेले रह गए या अवसाद से जूझ रहे लोगों को बहुत पसंद आ रहा है। इस संदर्भ में 'जाय फ्राम फियर' की लेखक कार्ला मेरी मैनली का कहना है, 'पसंदीदा गतिविधियां करना अक्सर तनाव दूर करने के लिए एकदम सही विकल्प होता है।' बड़ी कंपनियां भी ऐसी गतिविधियों के चलन को बढ़ावा देने में तेजी से जुट गई हैं।

लंदन और मैड्रिड में एक संवाद संग्रहालय 'डोपामाइन लैंड' अपने 'अंदर के बच्चे' को जगाने के लिए बचपन और वयस्क अवस्था के संधिकाल की गतिविधियां करवाता है। एम्स्टर्डम में हर उम्र के लोगों के लिए बना संवाद संग्रहालय साहसी लोगों को गुलाबी मार्शमैलो के समुद्र में गोता लगाने और दीवारों पर अगड़म-बगड़म कुछ भी लिखने या चित्र बनाने की सुविधा देता है। यूनाइटेड किंगडम के तीन शहरों में वयस्कों के लिए एक विशाल बाल पिट है, जहां हर महीने हजारों लोग मजे लेने के लिए आते हैं। दिन भर मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन से ऊबे हुए कामकाजी लोग इससे दूरी बनाने के दिलचस्प बहाने खोजने लगे हैं। बचपन की दुनिया में वापसी उन्हें पसंद आ रही है, क्योंकि इसमें वे उस बीते समय को जीते हैं, जब अधिकतर लोगों के पास मोबाइल और कंप्यूटर नहीं था।

आखिर कुछ तो कारण होगा कि अपनी वर्तमान जिंदगी में तमाम सुविधाओं के बीच रहने वाले लोग भी अब ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, जिसमें वे जीवन की संवेदनाओं का अहसास नहीं कर पाते! जो इसकी वजहें ढूंढ़ पाने और उसके समाधान की ओर साहस के साथ देखने की कोशिश करते हैं, वे अपने बचपन की दुनिया में मौजूद जीवन-तत्त्व में इसका हल खोजते हैं। अमेरिकी समाचार वेबसाइट 'हफपोस्ट' के अनुसार, पुरानी यादों को ताजा करने वाली गतिविधियों में शामिल होने से मन की सेहत सुधरती है। 'इमोशन' पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन की मानें तो पुरानी यादें आत्म-निरंतरता को प्रोत्साहित करती हैं, यानी अतीत और वर्तमान के बीच भावनात्मक संबंध को बनाए रखती हैं। जानकारों का कहना है कि 'किडल्टिंग' हमें कुछ पलों या घंटों के लिए ही सही, बचपन के उन सरल दिनों में लौटने का अवसर देता है, जो हमें खुशी देते थे। एक खबर यह भी आई थी कि लंदन स्थित 'डोपामाइन लैंड' जैसी जगहें खुश करने वाले हारमोन डोपामाइन को भी सक्रिय कर रही हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कुछ समय पहले कहा था कि कोविड महामारी में वैश्विक स्तर पर चिंता और अवसाद के मामलों में पच्चीस फीसद की बढ़ोतरी हुई है। इसलिए लोगों को खुश रहने के विकल्प तलाशने चाहिए। कई मनोवैज्ञानिक वयस्कों को चिंतित या तनावग्रस्त होने पर आपस में खेल खेलने, चित्रकारी करने, मिट्टी से मूर्तियां बनाने आदि का सुझाव देते हैं। शुरुआत में यह चिंताओं या जिम्मेदारियों के बोझ से बचने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन समय बीतने पर ये गतिविधियां हमें विस्मय की भावनाओं से भरने लगती हैं, क्योंकि शौक पूरा करते हुए साधारण चीजों को भी हम नए नजरिए से देखने लगते हैं, जिसमें जिज्ञासा, आनंद और कल्पना हो। ऐसी गतिविधियों से हमारे व्यवहार में सहजता बढ़ती है। हमारे अंदर अच्छा महसूस कराने वाले हारमोन होते हैं। यहां तक कि हमारी सोच और समझ व्यवस्थित होती है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भारतीय संस्कृति का प्रतीक हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत् 2082

आज से हिंदु कैलेंडर का नया वर्ष विक्रम संवत 2082 की शुरुआत होने जा रही है। हिंदू विक्रम संवत 2082 अंग्रेजी कैलेंडर के वर्ष 2025 से 57 वर्ष आगे होगा। नववर्ष के दिन प्रत्येक इंसान चाहे कहीं भी हो अपने आपको को उत्साहित, प्रफुल्लित व नई उर्जा से ओतप्रोत महसूस करता है। अधिकतर देशवासी 1 जनवरी को ही नववर्ष की शुरुआत मानते हैं लेकिन अपनी संस्कृति व इतिहास के प्रति हमारी उदासीनता के चलते यह सत्य नहीं है। 1 जनवरी से शुरू होने वाला कैलेंडर तो ग्रिगोरियन कैलेंडर है। इसकी शुरूआत 15 अक्टूबर 1582 को इसाई समुदाय ने क्रिसमस की तारीख निश्चित करने के लिए की थी क्योंकि इससे पहले 10 महीनों वाले रूस के जूलियन कैलेंडर में बहुत सी कमियां होने के कारण हर साल क्रिसमस की तारीख निश्चित नहीं होती थी। इस उलझन को सुलझाने के लिए 1 जनवरी को ही इन लोगों ने नववर्ष मनाना शुरू कर दिया। क्या हम भारतीयों ने भी यह सोचा की हमारा नववर्ष कबसे शुरू होता है? हमारा अपना क्या इतिहास है? ठीक है किसी को भी कोई भी उत्सव जब मर्जी मनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए यह उसका अपना निजी अधिकार है लेकिन क्या हम अपनी संस्कृति व अपने संस्कारों की तिलांजलि दे कर उत्सव मनाएं? आज जिस भारतीय संस्कृति का अनुसरण विदेशी लोगों ने करना शुरू किया है उसी भारतीय संस्कृति व सभ्यता को हम तहस-नहस करने पर तुले हैं। भारतीय कैलेंडर के अनुसार नववर्ष का आगाज 1 जनवरी से नहीं बल्कि चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवसंवत्सर आरंभ होता है जो अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार अक्सर मार्च-अप्रैल माह में आता है। पौराणिक मान्यता है कि पतझड़ के बाद बसंत ऋतु का आगमन भारतीय नव वर्ष के साथ ही होता है। बसंत में पेड़-पौधे नए फूल और पत्तियों से लद जाते हैं। इसी समय किसानों के खेतों में फसल पक कर तैयार होती है। पौराणिक तथ्यों के अनुसार, इसी शुभ दिन प्रभु श्री राम का राज्याभिषेक भी हुआ था। शरद ऋतु की कड़कड़ाती सर्दी में प्रायः सभी पेड़ों के पत्ते गिर जाते है ऐसे में बसंत के आगमन पर पेड़ों पर नए पत्ते एवं नवीन कोपलें आने लगती है। इस काल में प्रायः चारों ओर हरे भरे पेड़ पौधे एवं हरियाली दिखाई देने लगती है। यह पेड़-पौधों पर नए फल आने का समय होता है। इस समय चारों ओर रंग-बिरंगे सुन्दर फूल खिलने लगते है एवं पेड़ की शाखाओं पर पक्षी गाने लगते है। इस समय पूरी प्रकृति ही नए रंग में रंगी हुई प्रतीत होती है। चारों ओर वसंत ऋतु में जीवन की नवीनता दिखाई देने लगती है। ऐसे में प्रकृति भी हिन्दू नववर्ष का

स्वागत करती हुई प्रतीत होती है। भारतीय हिंदू कैलेंडर की गणना सूर्य और चंद्रमा के अनुसार होती है। दुनियाँ के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय हिंदू कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही हैं। जिसकी शुरुआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई। यह हिंदू कैलेन्डर राजा विक्रमादित्य के शासन काल में जारी हुआ था तभी इसे विक्रम संवत के नाम से भी जाना जाता है। विक्रमादित्य की जीत के बाद जब उनका राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने अपनी प्रजा के तमाम ऋणों को माफ करने की घोषणा करने के साथ ही भारतीय कैलेंडर को जारी किया इसे विक्रम संवत नाम दिया गया। यही नहीं यूनानियों ने नकल कर भारत के इस हिंदू कैलेंडर को दुनियाँ के अलग-अलग हिस्सों में फैलाया। भले ही आज दुनिया भर में अंग्रेजी कैलेंडर का प्रचलन बहुत अधिक हो गया हो लेकिन फिर भी भारतीय कलैंडर की महत्ता कम नहीं हुई। आज भी हम अपने व्रत-त्यौहार, महापुरुषों की जयंती-पुण्यतिथि, विवाह व अन्य सभी शुभ कार्यों को करने के मुहूर्त आदि भारतीय कलेंडर के अनुसार ही देखते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही वासंती नवरात्र भी प्रारंभ होते हैं। सबसे खास बात इसी दिन ही सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। ताज्जुब होता है जिस भारतीय कैलेंडर ने दुनियाँ भर के कैलेंडर को वैज्ञानिक राह दिखाई आज हम उसे ही भूलने लग गए हैं। भारतीय हिंदू नववर्ष के दिन शुभकामनाएं देने से हिचकिचाते हैं शायद इसलिए की कहीं हम पर रूढ़ीवादी का टैग न लग जाए? जबकि अपनी संस्कृति संस्कारों का अनुसरण करना रूढ़िवादीता नहीं। यह तो वह बहुमूल्य धरोहर है जिससे एक तरफ पूरा विश्व सीख रहा है तो दूसरी ओर हम इस धरोहर को खोते जा रहें हैं। दुनिया को राह दिखाने वाली संस्कृति आज खुद राह से भटकने को मजबूर है। भले ही आज सोशल मीडिया पर हिंदू नववर्ष को मनाने के लिए हम सब संदेशों को प्रचारित प्रसारित कर रहे हों लेकिन हकीकत में उस दिन को भूल जाते हैं। अपने धर्म व संस्कृति के उत्सवों को मनाने का सभी में लगाव होना चाहिए। हमारे महापुरुषों व वीर योद्धाओं ने धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए बहुत बलिदान दिया है क्या वह बलिदान इसलिए ही दिया था की एक दिन हम अपनी संस्कृति व धर्म को ही भूल जाएं? अभी भी समय है सभी को मिलजुलकर ऐसा प्रयास करना चाहिए जिससे विश्व में हमारी संस्कृति का एक ऐसा संदेश जाए की हम भारतीय अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए एकजुट हैं। क्या अब भी हमें अपने हिंदू कैलेंडर के अनुसार नववर्ष को नहीं मनाना चाहिए? जिसमें पूरे ब्रह्माण्ड की रचना है। आओ इस हिंदू नववर्ष को धूमधाम से मनाएं और आपसी भाईचारे व प्रेम को विश्वभर में ले जाएं।

आलेखः
डॉ. राकेश वशिष्ठ
वरिष्ठ पत्रकार एवं
संपादकीय लेखक

भड़काऊ बयान, सपा सांसद की राणा सांगा पर विवादित टिप्पणी

एक भड़काऊ बयान किस तरह हंगामे का कारण बन सकता है, इसका उदाहरण है समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन की ओर से राणा सांगा को लेकर की गई विवादित टिप्पणी। उन्हें इस टिप्पणी के जरिये अपने अधकचरे इतिहास ज्ञान का प्रदर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

सपा सांसद रामजीलाल सुमन को यह कहीं अच्छे से आभास होना चाहिए था कि राणा सांगा को लेकर देश का जनमानस कैसे विचार रखता है। यदि उनके बयान से कुपित लोग इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि उन्होंने संकीर्ण राजनीतिक कारणों से राणा सांगा को लेकर उकसावे वाला बयान दिया तो इसके लिए उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। एक भड़काऊ बयान किस तरह हंगामे का कारण बन सकता है, इसका उदाहरण है समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन की ओर से राणा सांगा को लेकर की गई विवादित टिप्पणी। उन्हें इस टिप्पणी के जरिये अपने अधकचरे इतिहास ज्ञान का प्रदर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसलिए और भी नहीं, क्योंकि उन्होंने यह टिप्पणी तब की, जब राज्यसभा में गृह मंत्रालय के कामकाज पर बहस हो रही थी। लगता है वह महाराष्ट्र के अपने विधायक अबू आजमी की तरह से चर्चा में आने का बहाना खोज रहे थे। यदि ऐसा कुछ नहीं था तो फिर इसकी क्या जरूरत थी कि वह बाबर की निंदा-आलोचना पर आपत्ति जताते हुए राणा सांगा पर सवाल उठाते? इसकी जरूरत इसलिए और भी नहीं बनती थी, क्योंकि अधिकांश इतिहासकार उस बात से सहमत नहीं,

जो उन्होंने बेतुके तरीके से कही। यदि इतिहास की कथित विसंगतियों का उदाहरण देने के लिए वैसा भोंडा तरीका अपनाया जाएगा, जैसा उन्होंने अपनाया तो इसे शरारत ही अधिक कहा जाएगा। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि उन्होंने वोट बैंक की सस्ती राजनीति के चलते राणा सांगा पर भड़काऊ बयान दिया। एक ओर वह यह मानते हैं कि इस देश में कोई भी बाबर की सराहना नहीं करता और दूसरी ओर उसकी निंदा पर उन्हें कष्ट भी होता है। आखिर क्यों? रामजीलाल सुमन को यह कहीं अच्छे से आभास होना चाहिए था कि राणा सांगा को लेकर देश का जनमानस कैसे विचार रखता है। यदि उनके बयान से कुपित लोग इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि उन्होंने संकीर्ण राजनीतिक कारणों से राणा सांगा को लेकर उकसावे वाला बयान दिया तो इसके लिए उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। निःसंदेह इसका यह भी अर्थ नहीं कि उनके बयान से कुपित लोग उनके घर धावा बोल देते। लोकतंत्र में इस तरह के कृत्य के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। किसी भड़काऊ बयान का विरोध कानून के दायरे में रहकर ही किया जाना चाहिए। इसकी इजाजत किसी को नहीं कि वह अपनी भावनाएं आहत होने के नाम पर हिंसा और तोड़फोड़ का सहारा ले। दुर्भाग्य से अब ऐसा आए दिन होने लगा है। इस प्रवृत्ति पर लगाम लगानी होगी, लेकिन इसी के साथ नेताओं को किसी भी विषय पर विचार व्यक्त करते समय सोच-समझकर बोलना सीखना होगा। ऐसा इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि नेताओं के बेतुके और उकसावे वाले बयानों के चलते सार्वजनिक विमर्श दूषित हो रहा है। विडंबना यह है कि कई बार ऐसे बयान जानबूझकर दिए जाते हैं। इससे बुरी बात और कोई नहीं हो सकती कि समाज को विभाजित करने वाले भड़काऊ बयान जानबूझकर दिए जाएं। यह विचित्र है कि रामजीलाल सुमन यह तो कह रहे हैं कि उनका इरादा किसी का अपमान करने का नहीं था, लेकिन उन्हें अपने कहे पर कोई अफसोस भी नहीं।

थाईलैंड-म्यांमा में कुदरत का कहर, तबाही के भयावह दृश्य और बचाव के इंतजाम

बताया जा रहा है कि बीते एक दशक के दौरान यह पहली बार है जब बैंकाक में इतना तेज भूकम्प महसूस किया गया। हालांकि थाईलैंड को भूकम्प के लिहाज से ज्यादा संवेदनशील नहीं माना जाता है, शायद इसीलिए वहां भवनों को बनाने के क्रम में भूकम्परोधी तकनीक का इस्तेमाल करना बहुत जरूरी नहीं माना जाता।

भारत में भी आए दिन भूकम्प के झटके किसी बड़ी आशंका के संकेत हो सकते हैं। थाईलैंड और म्यांमा में शुक्रवार को आए भूकम्प और उससे हुई तबाही ने एक बार फिर दुनिया के सामने इस चुनौती से निपटने के लिए व्यापक स्तर पर ठोस उपाय करने की जरूरत को रेखांकित किया है। म्यांमा में रिक्टर स्केल पर इस भूकम्प की तीव्रता 7.7 मापी गई। अमेरिकी जियोलाजिकल सर्वे के मुताबिक म्यांमा में पहले झटके के बारह मिनट के बाद दूसरा झटका आया, जिसकी तीव्रता 6.4 थी। खबरों के मुताबिक, इस भूकम्प से भारी तबाही हुई है और हजारों लोगों के मरने की आशंका है। वहीं थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में भी कई इलाकों से इमारतों के गिरने, सड़कों में दरारें आने और पुल के धराशायी होने सहित बड़े पैमाने पर नुकसान होने की खबरें आईं। बताया जा रहा है कि बीते एक दशक के दौरान यह पहली बार है जब बैंकाक में इतना तेज भूकम्प महसूस किया गया। हालांकि थाईलैंड को भूकम्प के लिहाज से ज्यादा संवेदनशील नहीं माना जाता है, शायद इसीलिए वहां भवनों को बनाने के क्रम में भूकम्परोधी तकनीक का इस्तेमाल करना बहुत जरूरी नहीं माना जाता। मगर चूंकि थाईलैंड के

पड़ोस में स्थित म्यांमा में अधिक भूकम्प आते हैं, इसलिए उसके असर से इस बार नुकसान का दायरा ज्यादा होने की आशंका है। दरअसल, इस स्तर के भूकम्प के तुरंत बाद उससे हुई क्षति का आकलन नहीं हो पाता है, लेकिन बाद में आमतौर पर तबाही का दायरा बड़ा दर्ज किया जाता है। यही वजह है कि म्यांमा के बड़े हिस्से में आपातकाल का एलान कर दिया गया। इस तरह की किसी भी प्राकृतिक आपदा की स्थिति में स्वाभाविक ही सबसे पहली जरूरत प्रभावित इलाकों में तुरंत पीड़ितों के लिए हर जरूरी चीजों की सहायता पहुंचाना होती है। इसी के मद्देनजर भारत ने बिना देर किए तबाही पर चिंता जाहिर करते हुए मदद की पेशकश की। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर संभव सहायता देने और अधिकारियों को तैयार रहने को कहा। पिछले कुछ दशकों से कुदरती आपदाओं के स्वरूप में तेजी से बदलाव आता दिख रहा है। भारत में भी आए दिन भूकम्प के झटके किसी बड़ी आशंका के संकेत हो सकते हैं। प्राकृतिक आपदा को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उससे बचाव के पुख्ता इंतजाम करके उससे होने वाले नुकसान को कम जरूर किया जा सकता है।

कोलकाता-लखनऊ आईपीएल मैच 6 की बजाय 8 अप्रैल को होगा

पुलिस ने सुरक्षा देने से मना किया, पिछले साल भी बढ़ी थी तारीख

नई दिल्ली। कोलकाता नाइट राइडर्स और लखनऊ सुपरजायंट्स के बीच आईपीएल का लीग स्टेज मैच आगे बढ़ गया है। बीसीसीआई ने शुक्रवार को बताया कि मैच अब 6 अप्रैल की बजाय 8 अप्रैल को खेला जाएगा। दरअसल, कोलकाता पुलिस ने 6 अप्रैल को रामनवमी होने के कारण सिक्योरिटी देने से मना कर दिया था। पिछले साल भी रामनवमी के कारण ईडन गार्डन्स में कोलकाता का मैच शिफ्ट हुआ था।

8 अप्रैल को 2 मैच खेले जाएंगे 8 अप्रैल को मंगलवार है, ऐसे में उस दिन अब 2 मैच खेले जाएंगे। कोलकाता-लखनऊ के बीच पहला मैच दोपहर 3.30 बजे ईडन गार्डन्स स्टेडियम में होगा। वहीं शाम 7.30 बजे से मुल्लांपुर में चेन्नई सुपर किंग्स और पंजाब किंग्स के बीच मैच खेला जाएगा।

6 अप्रैल को रविवार है। उस दिन 2 मैच खेले जाने थे, लेकिन अब एक ही मैच होगा। इस दिन यहां सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस के बीच शाम 7.30 बजे से मैच होगा। जबकि 5 अप्रैल को शनिवार के दिन पिछले शेड्यूल के मुताबिक 2 ही मैच खेले जाएंगे।

गुवाहाटी शिफ्ट होने वाला था मैच 6 अप्रैल को रामनवमी है। कोलकाता पुलिस ने कहा था कि उस दिन शहर में बहुत भीड़ होगी, इसलिए विभाग स्टेडियम में सिक्योरिटी नहीं दे पाएगा। बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन इस मैच को 6 अप्रैल के दिन ही गुवाहाटी में कराने की प्लानिंग कर रहा था। हालांकि, अब मुकाबले की तारीख बदल दी गई, जबकि ग्राउंड ईडन गार्डन्स ही रहेगा।

क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के अध्यक्ष स्नेहाशीष गांगुली ने बताया था, हमने पुलिस के साथ 2 मीटिंग की, लेकिन मैच के लिए हरी झंडी नहीं मिल पाई। सुरक्षा न होने से मैच में 65,000 दर्शकों की भीड़ को संभालना मुश्किल होगा। इसलिए मुकाबला शिफ्ट करना पड़ेगा।

बीजेपी नेता सुवेंदु अधिकारी ने बताया था कि राम नवमी पर पश्चिम बंगाल में 20 हजार से ज्यादा जुलूस निकलेंगे। इसलिए पूरे राज्य में कड़ी सुरक्षा रखने की जरूरत पड़ेगी।

न्यूजीलैंड ने पहला वनडे 73 रन से जीता

पाकिस्तान के खिलाफ सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई, चापमैन ने शतक लगाया

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को पहले वनडे में 73 रन से हरा दिया। इसी के साथ टीम ने सीरीज में 1-0 से ब?त बना ली है। 3 मैचों वाली वनडे सीरीज का पहला मुकाबला शनिवार को न्यूजीलैंड के नापियर में खेला गया।

पाकिस्तान ने टॉस जीतकर फिल्डिंग चुनी। कीवी टीम ने 9 विकेट के नुकसान पर 344 रन बनाए। 345 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान टीम 44.1 ओवर में 271 रनों पर सिमट गई।

मार्क चापमैन ने खेली शतकीय पारी मैच में न्यूजीलैंड के बल्लेबाज मार्क चापमैन ने शतक लगाया। उन्होंने 111 गेंदों पर 132 रन बनाएं। इसमें 13 चौके और 6 छक्के शामिल है। वे चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए थे। उनके अलावा डेरिल मिचेल ने भी 76 रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। पाकिस्तान के इरफान खान ने सबसे

ज्यादा 3 विकेट झटके।

न्यूजीलैंड के अब्बास ने लगाया सबसे तेज डेब्यू अर्धशतक

पाकिस्तानी मूल के खिलाड़ी मोहम्मद अब्बास ने 24 गेंदों पर वनडे इतिहास में डेब्यू करते हुए सबसे तेज 50 रन बनाए।

उन्होंने 52 रनों की पारी खेली। अपनी पारी में उन्होंने 3 चौके और 3 छक्के लगाएं।

अब्बास से पहले यह रिकॉर्ड भारत के ईशान किशन के नाम पर था। उन्होंने 2021 में श्रीलंका के खिलाफ 33 गेंदों में 50 रन बनाए थे।

पाकिस्तान से बाबर-सलमान की फिफ्टी टारगेट का पीछा करते हुए पाकिस्तान के बाबर आजम ने 93.97 के स्ट्राइक रेट से 83 गेंदों पर 78 रन बनाएं। वहीं सलमान आगा ने 48 गेंदों पर 58 रन बनाएं। न्यूजीलैंड के नाथन स्मित ने सबसे ज्यादा 4 विकेट लिए।

सीरीज का दूसरा मैच 2 अप्रैल को होगा सीरीज का दूसरा मुकाबला 2 अप्रैल को न्यूजीलैंड के हैमिल्टन में खेला जाएगा। मैच भारतीय समय अनुसार सुबह 3ः30 से शुरू होगा। वहीं सीरीज का तीसरा और आखरी मैच 5 अप्रैल को खेला जाएगा।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर स्टुअर्ट लॉ बने नेपाल के हेड कोच

भारत के मोंटी देसाई की जगह ली, 4 से ज्यादा टीमों को कोचिंग दे चुके

नई दिल्ली। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टुअर्ट लॉ अगले 2 सालों के लिए नेपाल पुरुष क्रिकेट टीम के हेड कोच चुने गए हैं। नेपाल क्रिकेट एसोसिएशन ने इसकी जानकारी दी है। लॉ से पहले भारतीय मूल के मोंटी देसाई नेपाल टीम के कोच थे। उनका कार्यकाल इस साल फरवरी में पूरा हो गया था।

लॉ इससे पहले कई अंतरराष्ट्रीय टीमों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने हाल ही में यूएसए पुरुष टीम को बांग्लादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज

जीतने में मुख्य भूमिका निभाई थी। उनके नेतृत्व में यूएसए ने 2024 के टी-20 वर्ल्ड कप के सुपर आठ में भी जगह बनाई थी। स्टुअर्ट लॉ ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 54 वनडे और 1 टेस्ट खेला है और 1291 रन बनाए हैं।

वेस्टइंडीज और बांग्लादेश के कोच रह चुके स्टुअर्ट

स्टुअर्ट लॉ 2011-12 में बांग्लादेश और 2018-19 में वेस्टइंडीज के हेड कोच रह चुके हैं। 2011 में स्टुअर्ट ने श्रीलंका और 2022 में अफगानिस्तान को भी टेम्परेरी कोचिंग दी थी। वहीं लॉ ने ऑस्ट्रेलिया की नेशनल टीम और अंडर-19 टीम को भी कोचिंग दी थी। वे उनके बैटिंग कोच थे।

स्टुअर्ट लॉ ने 2012 में बांग्लादेश क्रिकेट टीम को कोचिंग दी थी। उनकी कोचिंग में बांग्लादेश की टीम पहली बार एशिया कप फाइनल में पहुंची थी।

पूर्व कोच मोंटी देसाई के नेतृत्व में नेपाल ने 2024 के टी-20 वर्ल्ड कप में अपनी दूसरी उपस्थिति दर्ज की थी। वहीं टीम ने यूएसए को टी-20 इंटरनेशनल में 3-0 से हराया था। टीम ने घरेलू मैदान पर वनडे सीरीज में कनाडा को 3-0 से हराया था। 2023 में वनडे वर्ल्ड कप से पहले नेपाल ने अपना पहला एशिया कप भी खेला। उन्होंने उसमें एक भी मैच नहीं जीती।

केएल राहुल एसआरएच मुकाबले से पहले दिल्ली कैपिटल्स की टीम में फिर से शामिल हुए

विशाखापत्तनम। भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज केएल राहुल रविवार को आईपीएल 2025 सीजन में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ होने वाले मैच से पहले शनिवार को विशाखापत्तनम में दिल्ली कैपिटल्स की टीम में शामिल हो गए। राहुल पिछले हफ्ते लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ डीसी के सीजन के पहले मैच में अपनी पत्नी अथिया शेट्टी के साथ पहले बच्चे के जन्म के कारण नहीं खेल पाए थे। अथिया ने 24 मार्च को एक बच्ची को जन्म दिया।

दिल्ली कैपिटल्स ने एक्स पर जाकर राहुल के आगमन का वीडियो शेयर किया और लिखा, आप प्यारे हैं। आप

हमारे हैं। आप घर पर हैं। दिल्ली में आपका स्वागत है, केएलआर।

एक अन्य पोस्ट में, फ्रेंचाइजी ने डीसी की ट्रेनिंग जर्सी में राहुल की एक तस्वीर शेयर की और पोस्ट को कैप्शन दिया, खेल शुरू होने दें।

राहुल के रविवार को विशाखापत्तनम में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ दिल्ली के लिए पदार्पण करने की उम्मीद है, पिछले साल की मेगा नीलामी में उन्हें 14 करोड़ रुपये में फ्रेंचाइजी ने खरीदा था।

अक्षर पटेल की अगुआई वाली टीम ने राहुल की पूर्व फ्रेंचाइजी लखनऊ पर एक विकेट से रोमांचक जीत के साथ टूर्नामेंट की शुरुआत जीत के साथ की। आशुतोष शर्मा ने 31 गेंदों में नाबाद 66 रनों की पारी खेली और पांच छक्कों और इतने ही चौकों की मदद से लखनऊ से जीत छीन ली।

मैच के बाद दिल्ली के खिलाड़ियों ने 'मदर्स लैप बेबी स्विंग' एक्शन करके राहुल को नए पिता बनने पर बधाई दी। दिल्ली में अपने कदम के बारे में राहुल ने कहा कि पिछले साल की नीलामी के बाद यह उनके लिए रोमांचक और नर्वस करने वाला दोनों था।राहुल ने कहा, मेरे लिए यह एक नया अनुभव है - अपनी चौथी या पांचवीं आईपीएल फ्रेंचाइज से जुड़ना। यह रोमांचक और नर्वस करने वाला दोनों है। हर नई टीम अनिश्चितता लेकर आती है - खिलाड़ी कैसे तालमेल बिठाएंगे।

व्यापार

खरीफ फसल के लिए मिलता रहेगा सस्ता फर्टिलाइजर, 37 हजार करोड़ की सब्सिडी को हरी झंडी

नई दिल्ली। आगामी खरीफ फसल के लिए भी किसानों को सस्ता उर्वरक मिलता रहेगा। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने फास्फेटिक और पोटासिक (पीएंडके) उर्वरकों पर खरीफ सीजन के लिए 37,216 करोड़ रुपये की सबसिडी पर मुहर लगा दी। इससे उर्वरकों और अन्य तत्वों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़ रही कीमतों का किसानों पर असर नहीं होगा।

सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव के अनुसार एनपीकेएस ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी खरीफ सीजन 2025 के लिए अनुमोदित दरों के आधार पर प्रदान की जाएगी ताकि किसानों को सस्ती कीमतों पर इन उर्वरकों की सुचारू

उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

सरकार पीएंडके उर्वरकों के 28 ग्रेड उपलब्ध करा रही

दरअसल सरकार उर्वरक निर्माताओं/आयातकों के जरिए किसानों को सब्सिडी वाले मूल्यों पर पीएंडके उर्वरकों के 28 ग्रेड उपलब्ध करा रही है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार अपने किसान हितैषी दृष्टिकोण के अनुसार किसानों को सस्ती कीमतों पर पीएंडके उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उनके अनुसार उर्वरक कंपनियों को स्वीकृत और अधिसूचित दरों के अनुसार सब्सिडी प्रदान की जाएगी ताकि किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरक उपलब्ध कराए जा सकें।

अडाणी की सब्सिडियरी को 400 मेगावाट सोलर प्लांट का आर्डर

राजस्थान में प्लांट बनेगा उत्तर प्रदेश को 25 साल तक पावर सप्लाई करेगी

नई दिल्ली। अडाणी ग्रीन एनर्जी की सब्सिडियरी कंपनी को ट्वेल्व लिमिटेड उत्तर प्रदेश में सोलर पावर सप्लाई का प्रोजेक्ट मिला है। उत्तर प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन ने कंपनी को 400 मेगावाट के सोलर प्लांट का आर्डर दिया है।

प्लांट राजस्थान में बनाया जाएगा। इससे उत्तर प्रदेश को 25 साल तक 2.57 रुपए प्रति किलोवाट-आवर्स के टैरिफ पर बिजली सप्लाई की जाएगी। प्रोजेक्ट मिलने के ऐलान के बाद अडाणी ग्रीन के शेयर में 1.50 प्रतिशत की तेजी देखी गई। शेयर ने 976.45 रुपए का डे हाई बनाया। हालांकि ये 1.24 प्रतिशत गिरकर 948 रुपए पर बंद हुआ।

बीते 5 दिन में 0.97 प्रतिशत

अडाणी ग्रीन एनर्जी का शेयर 0.97 प्रतिशत गिरा है। वहीं 1 महीने में शेयर 23.62 प्रतिशत चढ़ा है। साल भर में कंपनी के शेयर में 47.89 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। अडाणी ग्रीन का मार्केट कैप 1.52 लाख करोड़ रुपए है।

अडाणी ग्रीन एनर्जी का प्रॉफिट वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में 85 प्रतिशत बढ़ गया। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में कंपनी का मुनाफा 474 करोड़ रुपए रहा। पिछले साल की इसी तिमाही में ये नेट प्रॉफिट 256 करोड़ रुपए था।पावर सप्लाई से कंपनी का रेवेन्यू 1,993 करोड़ रुपए रहा। ये पिछले साल सामान तिमाही में 1,765 करोड़ रुपए था।

इससे पहले अडाणी एनर्जी सॉल्यूशंस को मिला 2,800 करोड़ का ऑर्डर

21 मार्च को अडाणी एनर्जी सॉल्यूशंस को गुजरात में ?2,800 करोड़ का पावर ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट मिला था। कंपनी ने बताया कि उसे गुजरात में एक पावर ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट मिला है, जो मुंद्रा में ग्रीन हाइड्रोजन और ग्रीन अमोनिया की मैन्युफैक्चरिंग के लिए ग्रीन इलेक्ट्रॉन की सप्लाई करेगा। इस प्रोजेक्ट को 36 महीनों में देश को डिलीवर कर दिया जाएगा।

सरकार ने बढ़ाया केंद्रीय कर्मचारियों का महंगाई भत्ता

1 करोड़ 15 लाख लोगों को होगा फायदा

नई दिल्ली। सरकार ने केंद्रीय कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ते और पेंशनभोगियों के लिए महंगाई राहत में 2 प्रतिशत की बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी है। शुक्रवार (28 मार्च) को हुई कैबिनेट मीटिंग में डीए बढ़ोतरी पर फैसला हुआ। इससे पहले जुलाई 2024 में सरकार ने 3 प्रतिशत बढ़ोतरी की थी।

8वें वेतन आयोग के लागू होने से पहले इस बढ़ोतरी से महंगाई भत्ता 53त्न से बढ़कर 55 प्रतिशत हो जाएगा। इसका फायदा करीब 48 लाख केंद्रीय कर्मचारियों और 66 लाख पेंशनर्स को होगा।

यह बढ़ोतरी 1 जनवरी 2025 से लागू होगी। डीए की घोषणा में देरी हुई इसलिए अप्रैल के वेतन में पिछले तीन महीनों (जनवरी-मार्च 2025) के

एरियर के साथ बढ़ा हुआ डीए भी शामिल होगा।

आमतौर पर महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी 3 प्रतिशत से 4 प्रतिशत के बीच होती है, लेकिन इस बार बढ़ोतरी सिर्फ 2 प्रतिशत है। ये पिछले सात सालों में सबसे कम है। वहीं सरकार आम तौर पर होली और दिवाली जैसे बड़े त्योहारों से पहले बढ़ोतरी की घोषणा करती है। इस बार घोषणा होली के बाद की गई।

महंगाई बढ़ने के बावजूद सरकारी कर्मचारियों और पेंशनधारकों के जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए महंगाई भत्ता यानी, डी दिया जाता है। डीए की दरें ऑल इंडिया कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स के आधार पर तय होती हैं, और यह हर 6 महीने में अपडेट होती है।

भारत में दो तरह की महंगाई होती है। एक रिटेल यानी खुदरा और दूसरा थोक महंगाई। रिटेल महंगाई दर आम ग्राहकों की तरफ से दी जाने वाली कीमतों पर आधारित होती है। इसको कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स भी कहते हैं।

टॉप-10 कंपनियों में 8 की वैल्यू 88 हजार करोड़ बढ़ी

एचडीएफसी बैंक टॉप गेनर, मार्केट कैप 44,934 करोड़ बढ़ा, इंफोसिस की वैल्यू 9000 कम हुई

नई दिल्ली। मार्केट वैल्यूएशन के लिहाज से देश की 10 सबसे बड़ी कंपनियों में से 8 की मार्केट वैल्यू बीते हफ्ते के कारोबार में 88,086 करोड़ रुपए बढ़ गई है। इस दौरान प्राइवेट सेक्टर बैंक एचडीएफसी टॉप गेनर रहा। बैंक का मार्केट कैप 44,934 करोड़ बढ़कर 13.99 लाख रुपए पर पहुंच गया है।

एचडीएफसी के अलावा, एसबीआई की वैल्यू 16,600 करोड़

बढ़कर 6.89 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गई है। वहीं, टीसीएस की वैल्यू 9,063 करोड़ रुपए, आईसीआईसीआई बैंक की 5,140 करोड़ और आईटीसी की वैल्यू 5,033 करोड़ रुपए बढ़ी है।

पिछले हफ्ते इंफोसिस और रिलायंस की वैल्यूएशन में गिरावट रही। रिलायंस की वैल्यू ?9,136 करोड़ गिरकर 6.52 लाख करोड़ पर आ गई है।

वही, देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस का मार्केट कैप 1,962 करोड़ रुपए बढ़कर 17.25 लाख करोड़ रुपए पर आ गया है।

इस हफ्ते 280 अंक चढ़ा सेंसेक्स

हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन यानी शुक्रवार (28 मार्च) को सेंसेक्स करीब 198 अंक गिरकर 77,414 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी में करीब 72 अंकों की गिरावट रही, ये 23,519 पर बंद हुआ। इस हफ्ते सेंसेक्स 280 अंक चढ़ा है।

राजस्थान दिवस साप्ताहिक महोत्सवः 'रन फॉर फिट राजस्थान'

युवाओं की प्रतिभा को निखारने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध - मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

» जयपुर...अमर जवान ज्योति पर आयोजित रन फॉर फिट राजस्थान दौड़ का बलून छोड़कर दौड़ का शुभारंभ करते मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, साथ में खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़।

राष्ट्रीय खेलों में स्वर्ण पदक विजेताओं का किया गया सम्मान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि फिटनेस केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि हमारे जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमने फिट राजस्थान अभियान शुरू करने का संकल्प लिया था, 'रन फॉर फिट राजस्थान' इसी संकल्प का प्रतीक है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि देश में युवा, महिला, किसान और मजदूर सशक्त होंगे तो देश-प्रदेश भी सशक्त होंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार द्वारा राजस्थान दिवस महोत्सव के तहत महिला, किसान, अन्त्योदय, युवा एवं सुशासन को समर्पित कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

शर्मा ने राजस्थान दिवस समारोह के तहत कार्यक्रमों की श्रृंखला में शनिवार को अमर जवान ज्योति पर आयोजित रन फॉर फिट राजस्थान दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा स्वयं भी दौड़ में शामिल होकर प्रदेशवासियों को स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य सरकार हर खिलाड़ी को पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाने तथा उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए हमने वर्ष 2024-25 में 1614 खिलाड़ियों को 34 करोड़ रुपये की सहायता स्वीकृत की है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय पदक विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ भूखंड आवंटन, सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता और रोडवेज बसों में मुफ्त यात्रा जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। स्पोर्ट्स लाइफ इंश्योरेंस स्कीम से खिलाड़ियों को सुरक्षा कवच भी दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मिशन ओलंपिक-2028 के तहत 50 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण दिया जाएगा और जयपुर में 20 करोड़ की लागत से 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्पोर्ट्स' की स्थापना की जाएगी।

» जयपुर...अमर जवान ज्योति पर आयोजित रन फॉर फिट राजस्थान दौड़ में स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी दौड़ में शामिल होकर प्रदेशवासियों को स्वस्थ रहने का संदेश देते हुए।

शर्मा ने कहा कि सात चरणों में हुए राजस्थान के एकीकरण की यात्रा में चौथे चरण में वृहद् राजस्थान की स्थापना एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसकी यादों को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए हर साल राजस्थान दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि वृहद् राजस्थान की स्थापना संवत 2006 की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र इंद्रयोग में हुई थी, जिसे राजस्थान के एकीकरण में अहम भूमिका निभाने वाले लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने विशेष महत्व दिया था। उनकी और समस्त प्रदेशवासियों की भावना को सम्मान देते हुए राज्य सरकार ने अब हर साल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर ही राजस्थान दिवस मनाने का निर्णय लिया है।

राजस्थान का खेलकूद के क्षेत्र में गौरवपूर्ण इतिहास

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान का खेलकूद के क्षेत्र में गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। कई खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदेश की पताका लहराई है। पेरिस ओलंपिक में अनंतजीत सिंह व महेश्वरी चौहान ने निशानेबाजी में हिस्सा लिया। पेरिस पैरालंपिक में अवनी लेखरा ने स्वर्ण, सुंदर सिंह गुर्जर और मोना अग्रवाल ने कांस्य पदक जीतकर प्रदेश को गर्व का अवसर दिया। उन्होंने कहा कि 38वें राष्ट्रीय खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने 43 पदक हासिल किए। ये उपलब्धियां हमारे युवाओं की प्रतिभा का प्रमाण हैं। इस अवसर पर युवा मामले एवं खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि जीवन में फिटनेस का बहुत महत्व है। स्वस्थ नागरिक से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार अपनी योजनाओं और निर्णयों के माध्यम से प्रदेश में खेल और खिलाड़ियों को निरन्तर प्रोत्साहित कर रही है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड में संपन्न राष्ट्रीय खेलों में स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया तथा 9 खिलाड़ियों को जमीन आवंटन के पट्टे वितरित किए।

कार्यक्रम में संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, प्रमुख शासन सचिव राजस्व दिनेश कुमार, शासन सचिव खेल एवं युवा मामले नीरज के. पवन, 61 सब एरिया के जनरल ऑफिसर कमांडिंग मेजर जनरल रोहित मेहरोत्रा सहित विभिन्न खिलाड़ी, स्कूली छात्र-छात्राएं एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

राजस्थान में ठंडी हवा के कारण तापमान गिराः कल भी रहेगा असर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। उत्तर भारत से चली ठंडी हवा ने राजस्थान के शहरों में तापमान 7 डिग्री सेल्सियस तक गिरा दिया है। गंगानगर, सीकर में शुक्रवार को दिन का अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से नीचे दर्ज हुआ।

बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर में भी तापमान में 2 से लेकर 6 डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट हुई, जिसके कारण इन शहरों में अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे दर्ज हुआ। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक राज्य में अगले 2 दिन तापमान में थोड़ी और गिरावट होने की संभावना है। 1-2 अप्रैल से राज्य में हवा की दिशा बदलकर उत्तर से पश्चिमी हो जाएगी, जिसके बाद तापमान में बढ़ोतरी दर्ज होगी। जैसलमेर में भी शनिवार की सुबह हल्की ठंडी रही। जैसलमेर सहित बॉर्डर के जिलों में दो दिन से हल्के बादल भी छाए हुए हैं।

अलवर, पिलानी, सीकर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, बीकानेर, चूरू, गंगानगर समेत अन्य कई शहरों में अधिकतम तापमान में 2 से लेकर 7 डिग्री सेल्सियस तक गिरावट दर्ज हुई।

राज्य के कई शहरों में उत्तरी हवाओं के असर से रात का न्यूनतम तापमान भी गिर गया। सीकर के पास फतेहपुर में न्यूनतम तापमान 9.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। पाली में 9.9 डिग्री सेल्सियस, बीकानेर में 14.8, पिलानी और सीकर में 15.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। जैसलमेर, चूरू और गंगानगर में भी न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से नीचे दर्ज हुआ।

अब आगे क्या?

जयपुर मौसम विज्ञान केन्द्र ने राजस्थान में अगले दो दिन उत्तरी हवाओं का असर रहने और तापमान में 1 से 2 डिग्री सेल्सियस तक की ओर गिरावट होने की संभावना जताई है। 1-2 अप्रैल से राज्य में पश्चिमी हवा का प्रभाव बढ़ेगा और तापमान में बढ़ोतरी दर्ज होगी, जिससे न्यूनतम और अधिकतम तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी दर्ज होगी।

नगर निगमों के विलय का मामला- भाजपा सरकार ने नकारा मोदी का गुजरात मॉडल : अशोक गहलोत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य की भजन लाल सरकार पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने जयपुर, कोटा और जोधपुर में दो नगर निगमों को मिलाकर एक करने के फैसले को विकास विरोधी और जनविरोधी बताया है। गहलोत ने कहा कि भाजपा सरकार गुजरात मॉडल की बात करती है, लेकिन जब शहरी विकास की बात आती है, तो वे गुजरात के विपरीत काम करते हैं। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार ने हाल ही में 9 नए नगर निगम बनाए हैं, जबकि राजस्थान सरकार नगर निगमों की संख्या घटा रही है। गहलोत ने कहा कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि भाजपा सरकार विकास के नाम पर जनता को धोखा दे रही है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने शहरी विकास को गति देने के लिए नगर निगमों की संख्या बढ़ाई थी, लेकिन अब भाजपा सरकार इसे वापस ले रही है। गहलोत ने कहा कि यह फैसला शहरी विकास को धीमा कर देगा और जनता को नुकसान पहुंचाएगा। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी इस फैसले का पुरजोर विरोध करेगी और जनता के हित में लड़ाई लड़ेगी।

जयपुर-अजमेर हाईवे पर गाड़ी चलाना होगा महंगाः कार ड्राइवर को टोल टैक्स के 15 रुपए ज्यादा देने होंगे

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। जयपुर-अजमेर हाईवे पर गाड़ी चलाना अब महंगा हो जाएगा। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने इस रोड पर टोल टैक्स की दरों में 5 से लेकर 70 रुपए तक का इजाफा किया है। ये दरें 31 मार्च की रात 12 बजे से लागू होंगी।

नई संशोधित दरों के मुताबिक जयपुर से किशनगढ़ तक जाने वाले कार ड्राइवरों को अब 140 की बजाय 155 रुपए टोल टैक्स देना पड़ेगा। इस रूट पर ठिकरिया और बड़गांव टोल प्लाजा हैं। इसी तरह हल्के कॉमर्शियल व्हीकल, मिनी बस पर टोल टैक्स 225 रुपए देना पड़ता है, जो 240 रुपए हो जाएगा।

दरअसल, जयपुर-किशनगढ़ हाईवे देश के टॉप-10 व्यस्ततम हाईवे में शुमार है। जयपुर में ठिकरिया टोल प्लाजा पर हर रोज औसतन 33 हजार से ज्यादा गाड़ियां गुजरती हैं। इनसे हर रोज 60 लाख रुपए से ज्यादा का टोल टैक्स वसूला जाता है।

रिंग रोड पर भी 1 अप्रैल से बढ़ेगा

जयपुर में बनी दक्षिणी रिंग रोड (अजमेर बाइपास से आगरा बाइपास तक) पर भी 1 अप्रैल से टोल की दरों में बढ़ोतरी की जाएगी। अभी अजमेर रोड से आगरा रोड तक जाने वाले कार ड्राइवर को इस पूरे 47 किलोमीटर के रोड पर 120 रुपए का टोल टैक्स देना पड़ता है।

वहीं, हल्के कॉमर्शियल व्हीकल, मिनी बस पर टोल टैक्स 195 रुपए लगता है। इन टोल की दरों में कितनी बढ़ोतरी होगी, ये अभी निर्धारित नहीं किया है। लेकिन, 30 मार्च तक इन दरों का भी निर्धारण किया जाएगा।

अजमेर रोड पर करीब 10 जगह पर फ्लाईओवर बनाने का काम पूरा हो चुका है। इन पर करीब 300 करोड़ से ज्यादा का खर्च किया गया है। सबसे आखिर में 25 मार्च को भांकरोटा में फ्लाईओवर का काम पूरा हो गया था। इसे भी लोगों के लिए खोल दिया गया है। इससे पहले एनएचएआई की ओर से इस हाईवे पर पिछले 4 साल में 9 फ्लाईओवर (हीरापुरा, नर्सिंगपुरा, दहमीकलां, महलां, गाडोता, मोखमपुरा, सावरदा, पाडासोली, बांदर सिंदरी) बनाए जा चुके थे। इससे हाईवे के सभी 10 ब्लैक स्पॉट्स बंद हो गए हैं।

परंपरा के साथ आधुनिक ज्ञान की दृष्टि से ही बनेगा भारत विश्व गुरु-राज्यपाल बागडे

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर/अजमेर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि परंपरा के साथ आधुनिक ज्ञान की दृष्टि से ही भारत विश्व गुरु बनेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में कुलपति को कुलगुरु कहना प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना की दिशा में एक कदम है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति परिपूर्ण थी। उन्होंने नई शिक्षा पद्धति को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों के विकास से जुड़ी है।

राज्यपाल बागडे शनिवार को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के 12वें दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे। इसमें वर्ष 2023 एवं 2024 के स्वर्ण पदकों का वितरण किया गया। साथ ही विद्या वाचस्पति उपाधि धारकों को भी उपाधियां वितरित हुई। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में इस प्रकार के पाठ्यक्रम तैयार होने चाहिए जिससे समाज में रोजगार का सृजन हो सके। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन कर युवा उद्यमी बनने चाहिए। इससे देश के विकास में उनका योगदान सुनिश्चित होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा मनुष्य का निर्माण करने वाली हो। महर्षि दयानंद सरस्वती मानव मूल्यों के साक्षात उदाहरण रहे है।

उन्होंने कहा कि देश के 400 कुलगुरुओं तथा 1000 से अधिक शिक्षाविदों ने दो वर्षों तक गहन चर्चा के उपरांत नई नीति को बनाया है। यह शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करने में कारगर सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि अर्जित विद्या का व्यवहारिक उपयोग समाज हित में और राष्ट्रहित में किया जाना चाहिए। शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसीलिए प्राध्यापकों और अध्यापकों को नई पुस्तकें पढ़ने के साथ ही नई विद्या भी प्राप्त करनी चाहिए। विद्यार्थी को भी पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें को भी पढ़ने में अपना समय देना चाहिए। इससे उनकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि दीक्षांत समारोह माता-पिता, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति दायित्वों के स्मरण का दिन होता है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली एक प्रक्रिया है। आज के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और डिजिटल युग में हमें विश्व के साथ-साथ चलना होगा। बढ़ती तकनीक में आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने समाज को बहुत प्रभावित किया है। सोशल मीडिया और सार्वजनिक जीवन पर इसके दुष्परिणाम देखे जा सकते हैं। नई पीढ़ी को इन दुष्प्रभावों से बचाए जाने की आवश्यकता है। महिला एवं बाल विकास मंत्री डॉ. मंजू बाघमार ने कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थी की जीवन यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। विद्यार्थी जीवन में सीखे गए अनुशासन, विनम्रता और नैतिक मूल्यों से आदर्श नागरिक का निर्माण होता है। कुलगुरु कैलाश सोडाणी ने कहा कि भारत सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था है। नया भारत समस्याओं से टकराकर मिटाना जानता है।

राजस्थान दिवस समारोह के अवसर पर तीन दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का शुभारंभ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान दिवस समारोह के अवसर पर शासन सचिव पर्यटन, कला एवं संस्कृति रवि जैन ने शनिवार को जयपुर स्थित जवाहर कला केन्द्र की अलंकार गैलरी में तीन दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

प्रदर्शनी में सौ से अधिक आकर्षक छाया चित्रों के माध्यम से राजस्थान की कला, संस्कृति, महल, किले, बावड़िया, लोक जीवन, वन्य जीवन, तीज-त्यौहार, भोजन, पकवान एवं पहनावे को प्रदर्शित किया गया है।

रवि जैन ने बताया कि इस प्रदर्शनी में राजस्थान की प्रशासनिक सेवा के कई अधिकारियों द्वारा खींचे गए फोटोज प्रदर्शित किये गये हैं। जिनमें आईएएस डॉ. जीतेन्द्र सोनी, आईएफएस अरिजीत बैनर्जी, आईपीएस हेमंत शर्मा, आईपीएस सचिन मित्तल, के द्वारा खींचे गए फोटोज शामिल हैं। इसी के साथ कई फोटो जर्नलिस्ट, प्रोफेशनल फोटोग्राफर और स्टूडेंट्स फोटोग्राफर एवं कई डॉक्टर्स के द्वारा खींचे गए छाया चित्र प्रदर्शित किए गए। इस प्रदर्शनी को प्रसिद्ध फोटो जर्नलिस्ट संजय कुमावत ने क्यूरेट किया है। प्रदर्शनी में कैमरे के माध्यम से दृश्य कहानियां प्रदर्शित की गई है। आगन्तुकों को आनंदित करने वाली इस अद्भुत फोटो प्रदर्शनी में आमजन भी शिरकत कर सकते है।

व्यवसाय अध्ययन की परीक्षा 9 अप्रैल को

जयपुर। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से 12वीं कक्षा वाणिज्य वर्ग की निरस्त की गई व्यवसाय अध्ययन विषय की परीक्षा 9 अप्रैल को आयोजित की जाएगी। बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा वाणिज्य वर्ग में 22 मार्च को हुई व्यवसाय अध्ययन की परीक्षा को निरस्त किया गया था। अब यह परीक्षा पूर्व निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर 9 अप्रैल को प्रातः 8.30 से 11.45 बजे तक आयोजित की जाएगी।

अनूठी कार रैली और ट्रैजर हंट 'द ग्रैंड हेरिटेज चेज' का आयोजन आज

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य पर 30 मार्च को राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के सहयोग से द ग्रैंड हेरिटेज चेज एक अनूठी कार रैली और ट्रैजर हंट का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम का आगाज सुबह 9 बजे से जयपुर में अमर जवान ज्योति पर होगा। जहां मुख्य अतिथि, राजस्थान की उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी द्वारा झंडी दिखाकर रैली का उद्घाटन किया जाएगा। इस अवसर पर पर्यटन, कला और संस्कृति सचिव तथा आयुक्त, आईएएस, रवि जैन विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। समापन समारोह होटल फेयरमोंट जयपुर में होगा, जहां विजेताओं को पुरस्कार दिए जाएंगे। यह जानकारी आईसीसी राजस्थान की चेयरपर्सन, जयश्री पेरीवाल ने दी।

उन्होंने आगे बताया कि राजस्थान की समृद्ध धरोहर का जश्न मनाने के लिए इस कार्यक्रम को विशेष रुप से तैयार किया है। इस आयोजन में 30 थीम्ड कारें जयपुर के सांस्कृतिक स्थलों से गुजरते हुए रिडल्स हल करेंगी और राजस्थान के इतिहास से प्रेरित चुनौतियां पूरी करेंगी। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण होंगे- एक थीम्ड कार रैली, जिसमें प्रतिभागी अपनी गाड़ियों को राजस्थान के पारंपरिक चित्रकला, किलों और कला रूपों के हिसाब से सजाएंगे। इसके अतिरिक्त, जयपुर के सांस्कृतिक स्थलों जैसे हवा महल, आमेर फोर्ट और जंतर मंतर के आसपास गाइडेड चेकप्वाइंट्स होंगे, जहां टीमों को राजस्थान के इतिहास, लोककथाओं और प्रसिद्ध स्थलों से जुड़ी पहेलियां हल करनी होंगी। इस कार्यक्रम में राजस्थान सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, पर्यटन से जुड़े स्टेकहोल्डर्स और कॉर्पोरेट लीडर्स शामिल होंगे।

विधाता ने तय किया, वह होगा

एसके मंगल

मानस विद्वानों का कहना है कि जो विधाता ने तय किया है,वह निश्चित होगा। श्री सीताराम जी के वनवास के बाद पूरी अयोध्या सूनी हो गई थी और राजमहल वीरान लगने लगे थे। यही प्रश्न विचलित भरत ने गुरुवर से पूछा कि राम सीता का विवाह शुभ मुहूर्त में हुआ । राज्याभिषेक का मुहूर्त भी प्रकांड विद्वान त्रिकालदर्शी गुरुजनों ने निकाला । तब राम जानकी को सिंहासन की बजाय वनवास क्यूं मिला ? तमाम शास्त्र विफल कैसे हो गए ? गुरु वशिष्ठ ने भरत को बैठाया और शांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा - सुनहु भरत भावीं प्रबल बिलख कहेहूं मुनिनाथ। हानि लाभ जीवन मरण, जस अपजस विधि हाथ।।जो विधि ने निर्धारित किया वह होकर रहेगा । विधि के लिखे को न शास्त्र बदल सकते हैं , न ज्योतिष , न भाग्य , न वर्तमान । यह विधाता के हाथ है । मुहूर्त में भला इतनी शक्ति कहां कि वह विधि का लेख बदल दे । होनी प्रबल है और घटकर रहेगी। भावीं ही थी जिसने संसार के सबसे प्रबल साम्राज्य अयोध्या को सूना कर दिया । सब अकेले अकेले। राम सीता वन में अकेले फिर सीता लंका में अकेली। वैधव्य झेलती कौशल्या , सुमित्रा अकेली। अपार पापबोध में घिरीं संत्रास और आत्मधिक्कार सहती कैकेई अकेली। उर्मिला अकेली , मांडवी अकेली , श्रुतकीर्ति अकेली । सूनी अयोध्या सूनी जनकपुरी, प्रजा अकेली । गुरु अकेले। विधि ने जो रचा वह होकर रहेगा । सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र इसी बलवान होनी के चलते डोम बने और पत्नी से पुत्र का शुल्क मांग लिया । शकुंतला दर दर भटकीं , दुष्यंत सब भूल गए। मायावी कृष्ण को भील के एक बाण ने अंत तक पहुंचा दिया । दशरथ का तीर श्रवण कुमार को लगा। विधि के कारण सोने की लंका जली। सती की मृत्यु को शिव टाल न पाए , पुत्र दक्ष को ब्रह्मा समझा न पाए और मोहिनी रूप धरकर भी विष्णु ने राक्षस को अमृतपान करा दिया।अपने प्रारब्ध को न कंस टाल पाए , न रावण , न परीक्षित और न रामकृष्ण परमहंस । शास्त्र गवाह है।मानव अपने जन्म के साथ ही मृत्यु लिखवाकर लाता है । लाभ हानि जीवन मरण यश अपयश विधि के हाथ हैं । विधि परमात्मा के आधीन है । उसके लिखे मिटे न मिटाए।गीता में साफ कहा है कर्म कर फल मैं दूंगा। प्रारब्ध और पुरुषार्थ एक दूजे से बंधे हैं । गुरु वशिष्ठ ने जो कहा , वह संसार सार है । किसी भी क्षेत्र में हों , विधि विधान पर भरोसा रखें।

जीवनदाता बनकर आया पुलिस का जवान बाबूलाल, रक्तदान कर बचाई गंभीर बीमार, गरीब बालिका की जान

बाबूलाल पुलिस के जवान ने पूर्व में भी रक्तदान कर बचाई है गंभीर बीमार मरीजों की जान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। मानव सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश खोईवाल ने बताया कि जिला चिकित्सालय बूंदी में भर्ती खून की कमी से गंभीर बीमार 17 वर्षीय गरीब मासूम बालिका कोमल का हीमोग्लोबिन मात्र 3 पॉइंट ही रह गया था, जिस वजह से बालिका के जीवन पर खतरा मंडराने लगा था डॉक्टर ने बालिका का जीवन बचाने के लिए जल्द ही 2 यूनिट बी पोजिटिव रक्त चढ़ाने को कहा लेकिन बूंदी ब्लड बैंक में B पॉजिटिव रक्त उपलब्ध नहीं होने की वजह से बालिका के परिजन दो दिन से परेशान हो रहे थे,जिस पर मानव सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश खोईवाल के फोन कर संपर्क किया और बालिका की गंभीरं स्थति से अवगत कराने पर खोईवाल ने शोशल मीडिया पर बालिका का जीवन बचाने के लिए जीवनदाता आगे आने की पोस्ट की थी जिसकी सूचना पर रक्तदूत बनकर आए बूंदी पुलिस के जवान बाबूलाल ने अपना बी पोजिटिव रक्त का दान कर गंभीर बीमा बालिकां के लिए जीवनदाता बने। बूंदी पुलिस के जवान बाबूलाल इससे पूर्व में भी गंभीर बीमार गरीब मरीजों के लिए कई बार कर चुके हे रक्तदान, अपने अधिकारियों की प्रेरणा से ओर मानव सेवा समिति द्वारा की जा रही मानव सेवा और जीव दया से प्रेरित बाबूलाल अब तक 5 बार रक्तदान कर चुके है। इस दौरान एडवोकेट रमेश चंद आजाद एडवोकेट मुकेश वर्मा रवि कुमार सूरज राठौर सोनू डगोरिया आदि मौजूद रहे

नगर निकायों एवं पंचायतराज संस्थाओं में भाजपा सरकार द्वारा नियम विरूद्ध तरीके से किया जा रहा है परिसीमन

जिला प्रभारी राखी गौत्तम ने किया जिला एवं ब्लॉक स्तर पर कमेटी का गठन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां । राज्य की भाजपा सरकार द्वारा प्रदेश के नगर निकायों एवं पंचायराज संस्थाओं में जनभावना के विपरीत, नियम विरूद्ध एवं राजनैतिक दुर्भावनावश नगर निकायों की सीमावृद्धि, वार्डों का परिसीमन/पुर्नगठन किया जा रहा है। राजस्थान प्रदेष कांग्रेस कमेटी की महासचिव एवं बारां जिला प्रभारी श्रीमती राखी गौत्तम ने बताया कि इस सम्बन्ध में उनके द्वारा 28 मार्च 2025 को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय बारां पर जिला बारां के कांग्रेसजनों की बैठक ली गई। बैठक में लिए गए निर्णयानुसार बारां जिले में नगर निकाय एवं पंचायतराज संस्थाओं के वार्डो के परिसीमन/पुर्नगठन से सम्बन्धित आपत्तियां प्रषासन को दर्ज करवाने के लिए बारां जिले में जिला एवं ब्लॉकवाईज कमेटियां गठित की गई। जिला कमेटी में रामचरण मीणा जिलाध्यक्ष डीसीसी, हंसराज मीणा सचिव पीसीसी, करणसिंह राठौड पूर्व विधायक छबडा, पानाचन्द मेघवाल पूर्व विधायक बारां-अटरू, श्रीमती निर्मला सहरिया पूर्व विधायक किशनगंज, घनश्याम नागर वरिष्ठ कांग्रेस नेता, एडवोकेटस-भारत भूषण सक्सेना, बृजकिशोर शर्मा, असलम भारती को शामिल किया गया है। गौत्तम ने बताया कि इसी प्रकार ब्लॉक एवं नगर मांगरोल की कमेटी में रामस्वरूप बैरवा ब्लॉक अध्यक्ष, कौशल किशोर सुमन पूर्व चेयरमेन नगर पालिका मांगरोल, मोहम्मद इदरीश खान पूर्व चेयरमेन सीसवाली, महावीर पांचाल मण्डल अध्यक्ष, कृष्णमुरारी मीणा सीमल्या, मनोज आर्य एडवोकेट को शामिल किया गया है। ब्लॉक एवं नगर बारां की कमेटी में सिद्वार्थ नागर ब्लॉक अध्यक्ष, प्रशांन्त भारद्वाज नगर अध्यक्ष, एडवोकेट धैर्य नागर, नरेश गोयल पैंतरा उप सभापति. बारां, बनवारी मीणा उपाध्यक्ष डीसीसी, मण्डल अध्यक्ष-पवन गौत्तम कोयला, सुनील नागर बामला, पटेल महावीर मीणा को शामिल किया गया है। ब्लॉक एवं नगर अन्ता की कमेटी में ओमप्रकाश सुमन मिर्जापुर ब्लॉक अध्यक्ष, देवी शंकर मालव पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष, ललित गालव नगर अध्यक्ष, भगवान दाधीच एडवोकेट, मण्डल अध्यक्ष-महेश सिंघल, भवानीशंकर मीणा, संतोष गालव पार्षद को शामिल किया गया है। इसी प्रकार ब्लॉक एवं नगर अटरू में भारतेन्द्र सिंह सिसोदिया ब्लॉक अध्यक्ष, मण्डल अध्यक्ष-श्रीमती रीना यादव, योगेश कुमार नागर, दिनेश नेनीवाल पार्षद, राजेन्द्र प्रजापति अटरू, धर्मपाल शर्मा कवाई को सम्मिलित किया गया है। ब्लॉक छीपाबडौद की कमेटी में मूलचन्द शर्मा ब्लॉक अध्यक्ष, दिनेश शुक्ला एडवोकेट, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष-बाबूलाल टाटू, परमानन्द मीणा, द्वारकालाल नागर सरपंच ढोलम, बृजराज मीणा महासचिव डीसीसी, लोकेन्द्र सिंह सरपंच सारथल, मेहफूज अली पूर्व सरपंच, आसिफ अली एडवोकेट को शामिल किया गया है। ब्लॉक एवं नगर छबडा की कमेटी में पार्षद-चिरोंजीलाल भार्गव एडवोकेट, हरिश माहेश्वरी नगर अध्यक्ष, दिग्विजय सिंह एडवोकेट, रामदयाल लोधा जिपस, पार्षद-गोविन्द दरबार, आसिफ अली को सम्मिलित किया गया है। ब्लॉक शाहबाद में धर्मेन्द्र यादव ब्लॉक अध्यक्ष, राजवीर सिंह यादव जिला उपाध्यक्ष डीसीसी, प्रदीप मेहता पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष, सुआलाल मेहता प्रधान प्रतिनिधि शाहबाद, सुरेन्द्र सिंह चौहान मण्डल अध्यक्ष, एडवोकेट राजेन्द्र राठौर को कमेटी में शामिल किया गया है।

राजस्थान दिवस के अवसर पर 30 मार्च को सांस्कृतिक संध्या एवं कविता पठन का होगा आयोजन

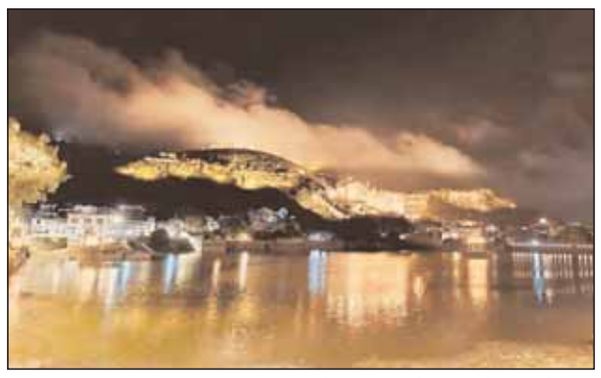

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बून्दी। बराजस्थान दिवस महोत्सव के तहत 30 मार्च को सायं 7:30 बजे से नवलसागर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कविता पठन का आयोजन किया जाएगा। सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेमशंकर सैनी ने बताया कि राजस्थान दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में लोक कलाकारों द्वारा चरी, कालबेलिया नृत्य की प्रस्तुतियां दी जाएगी। साथ ही स्थानीय कवियों द्वारा कविता पठन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इसी दिन राजकीय संग्रहालय, सुखमहल में प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक चित्रकला प्रदर्शनी व शहर के मुख्य पर्यटक स्थलों पर प्रातः 10 से दोपहर 1 बजे तक लोक कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियां दी जाएंगी।

इनर व्हील क्लब द्वारा सर्वाइकल कैंसर जागरूकता अभियान

आज अरुणिमा नर्सिंग होम के विद्यार्थियों के मध्य कैंसर मुक्त भारत रेली का आयोजन किया गया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी । इनर व्हील क्लब द्वारा सर्वाइकल कैंसर जागरूकता अभियान की श्रृंखला के तहत आज अरुणिमा नर्सिंग होम के विद्यार्थियों के मध्य कैंसर मुक्त भारत रेली का आयोजन किया गया। रेली से पूर्व विद्यार्थियों को सर्वाइकल कैंसर के लक्षण एवं बचाव के विषय में व्याख्यान दिया गया तथा समय-समय पर परिजनों के टेस्ट करवाने को छात्रों को जागरूक किया गया। रैली के पश्चात सभी छात्रो का आभार व्यक्त किया । इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष डॉक्टर पूर्णिमा दीक्षित, सरोज वर्मा, पुष्पा चौधरी, सरबजीत कौर, आशा माथुर,नर्सिंग स्टाफ एवं बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित रहे।

पाश्चात्य संस्कृति को छोड़ कर पुनः अपनी संस्कृति को सभी को अपनाना होगा -आनंद प्रताप

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बारां नगर का वर्ष प्रतिपदा उत्सव श्री राम स्टेडियम में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ आद्य सरसंघ चालक प्रणाम से हुआ। मुख्य वक्ता आनंद प्रताप सिंह बताया कि वर्ष में एक बार सभी स्वयंसेवक वर्ष प्रतिपदा उत्सव पर आद्य सरसंघ चालाक प्रणाम करते हे संघ की युगानुकुल व्यवस्था परिवर्तन के लिए डॉक्टर हेडगेवार ने एक अनोखी पद्धति प्रारंभ की संघ में व्यक्ति पूजा का भाव नहीं है डॉक्टर हेडगेवार के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बौद्धिक वक्ता ने बताया कि डॉक्टर हेडगेवार जन्मजात देशभक्त व राष्ट्रभक्त थे देश की कई क्रांतिकारी गतिविधियों में डॉक्टर हेडगेवार ने भाग लिया अनुशीलन समिति के सदस्य वह सशक्त राष्ट्रभक्त क्रांतिकारी बनकर के देश के लिए संघर्ष किया आज वर्तमान समय की बात करते हैं तो आदर्श समाज का निर्माण करना होगा जिनका नाम मात्र सुनने से ही सभी स्वयंसेवकों में ऊर्जा का प्रवाह संचालित होता है वह नाम है डॉक्टर हेडगेवार भारतीय नववर्ष को प्रकृति भी वंदन करती है खगोलीय काल गणना के अनुसार जिस उत्सव और पर्व को मनाया जाता है इसी दिन भगवान श्री राम का राज्याभिषेक ,युधिष्ठिर का राज्यअभिषेक ,गुरु अंगद देव का प्रकाशपर्व ,संत झूलेलाल जयंती कई प्रकार की ऐतिहासिक कार्य व पर्व इस दिन से जुड़े हुए हैं हम सबको धीरे-धीरे पश्चाती संस्कृति को छोड़कर के अपनी मूल संस्कृति को अपनाना होगा आज कहीं जगह देखते हैं तो विदेशों में भी भारतीय संस्कृति का प्रभाव बड़ा है कई देशों में भारतीय संस्कृति को लोगों ने स्वीकार किया है इसलिए आज सभी को अपनी संस्कृति को मूल रूप से अपनाना होगा । स्वयंसेवक स्वयं की जय हो, इसलिए काम नहीं करता भारत की जय हो इसके लिए संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक काम करता है कार्यक्रम पर मंच की शोभा बढ़ाने के लिए विभाग संचालक रमेश मेहता, जिला संघ चालक डॉ.राधेश्याम गर्ग कार्यक्रम मे उपस्थित रहे।

रामकरण अजमेरा बने राठौर तेली समाज के जिला अध्यक्ष

जिले के सभी समाज बंधुओ ने उत्साह पूर्वक भाग लिया और भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित हुआ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। जिले के सभी समाज बंधुओ की सहमति से राठौर तेली समाज के जिलाध्यक्ष का चुनाव भी संपन्न हुआ जिसके अंदर रामकरण अजमेरा को राठौर तेली समाज का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया होली मिलन समारोह के अंदर मुख्य अतिथि के रूप में बूंदी सभापति सरोज अग्रवाल और अध्यक्षता भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष कालू लाल जांगिड़, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल और विशिष्ट अतिथि भाजपा नेता दिव्या डोगरा रही। भामाशाह सम्मान समारोह के साथ विशाल भजन संध्या में गायक कलाकार विजय तंवर ने अपनी मधुर वाणी से भजनों का गान किया और कर्मा बाई जयंती एवं होली मिलन समारोह बड़ी धूमधाम और उत्साह के साथ संपन्न हुआ । जिसके अंदर छात्रावास अध्यक्ष चंद्र प्रकाश राठौर'' राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल राठौर, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष अल्का पंचोली, भाजपा पूर्व अध्यक्ष शौकीन चंद्र राठौर, युवा जिलाध्यक्ष नवनीत राठौर डाबी, महिला जिलाध्यक्ष ममता अजमेरा, भाजपा नेता अंकुर राठौर "मनीष राठौर (रडी) "छात्रावास संरक्षक मोहनलाल मांगरोला, मोहनलाल अजमेरा ,राजेंद्र नैणावा, मुरली अजमेरा रामावतार राठौर, दबलाना मंडल अध्यक्ष हेमराज राठौर , बसोली मंडल अध्यक्ष शिव राठौर , राम राय राठौर, नंदकिशोर राठौर, कन्हैया लाल राठौर, रामपाल मांगरेदा, केसरी लाल गुलानिया, एन के राठौर, रमेश राठौर, शिवराज राठौर,प्रदीप राठौर, पुरुषोत्तम इंदौरा,मुकेश डोडारिया आदि कई संख्या में समाज बंधु मौजूद रहे।

राष्ट्रीय अधिवेशन के निमित्त किया जनसम्पर्क अभियान

बूंदी। राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ के राष्ट्रीय अधिवेशन के तहत आयुर्वेद चिकित्सालय बालचंद पाड़ा में सम्पर्क किया गया। इस दौरान राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ भामसं के जिला मंत्री सुदेश गौतम ने बताया कि आज आयुर्वेदिक चिकित्सालय में प्रदेश अध्यक्ष मेघवाहन सिंह जी के प्रदेश अध्यक्ष बनने के उपरांत प्रथम बार आगमन पर वहां के चिकित्सकों व कर्मचारियों ने साफा बंधवाकर व माल्यार्पण कर स्वागत किया। वहाँ पर माहेश्वरी भवन,जैत सागर रोड बूंदी दिनांक 26 अप्रैल को होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन के बारे में चर्चा की गई। इस सम्पर्क अभियान के दौरान जिला अध्यक्ष विकास दीक्षित, नरेंद्र गौतम , डॉ.सुनील कुशवाह, डॉ मालती पारीक, डॉ पारुल सोनी, डॉ विजेन्द्र मीणा, रामप्रकाश , तेजमल प्रजापत, विशाल शर्मा, संतोष , शबनम,एकता सोनी, ऋषिराज कुमावत, राजकुमार बंसल के साथ-साथ चिकित्सालय व संगठन के कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

वतन फाउंडेशन राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक आयोजित

सवाई माधोपुर । टीम वतन फाउंडेशन हमारा पैगाम भाईचारे के नाम की थीम को लेकर पिछले 10 वर्षों से धरातल पर काम करने वाली टीम वतन फाउंडेशन की राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक शनिवार को खेरदा स्थित जय हिंद हाऊस पर आयोजित की गई। मीडिया प्रभारी नरेन्द्र शर्मा ने बताया कि वतन फाउंडेशन की कार्यकारणी गठन के बाद शनिवार को आयोजित हुई बैठक में सभी पदाधिकारी मौजूद रहे। वतन फाउंडेशन के अध्यक्ष हुसैन आर्मी ने सभी टीम के पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि टीम वतन फाउंडेशन की सोच हमारा पैगाम भाईचारे के नाम उन्होंने कहा कि फाउंडेशन का कार्य हे सेवा करना चाहे ईद पर नमाजियों को पानी पिलाकर सेवा करना हो चाहे रामनवमी पर निकलने वाले जुलूस में आने वाले लोगों की सेवा करना हो।उन्होंने कहा कि हमारा मकसद सिर्फ सेवा करना हे।वही फाउंडेशन के संरक्षक राजेश शर्मा ने बताया कि वतन फाउंडेशन टीम की कार्यकारिणी का गठन प्रथम बार किया गया ओर सभी को पद देकर जिम्मेदारियां सौंपी गई।इसी के साथ फाउंडेशन के अध्यक्ष हुसैन आर्मी ने सभी पदाधिकारियों को पदों के कार्य को लेकर अवगत करवाया ।फाउंडेशन की महासचिव रूमा नाज ने कहां की कार्यकारणी के गठन के बाद हम सबको मिलकर ओर मजबूती के साथ कार्य करना होगा।जिससे कि फाउंडेशन के कार्यो को गति देकर आगे बढ़ाया जा सके। बैठक में संरक्षक रजनी लश्कार,मंजू गंगवाल, सुनीता मधुकर,कैलाश सिसोदिया, संजय बैरवा,मुकेश जैन, नरेंद्र शर्मा, प्रोफेसर रामलाल,सलीम खान,टीपू सुल्तान,महेश योगी,आसिफ रजा सहित कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्रीराम स्टेडियम का हो शीघ्र कार्य प्रारंभ - विधायक बैरवा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बारां। राजस्थान के बजट घोषणा में बारां जिला मुख्यालय पर स्थित श्रीराम स्टेडियम के आधुनिकरण को लेकर की गई मुख्यमंत्री की घोषणा के तहत शीघ्र ही स्टेडियम का कार्य प्रारंभ किए जाने को लेकर बारां -अटरू विधायक राधेश्याम बैरवा, भाजपा के जिलाध्यक्ष नरेश सिंह सिकरवार,फुटबॉल संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष निर्मल माथोडिया,फुटबॉल संघ के जिलाध्यक्ष भीमराज चौधरी ने जिला कलक्टर रोहिताश्व सिंह तोमर से मुलाकात की। फुटबॉल संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष निर्मल माथोडिया ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा में श्रीराम स्टूडियो के आधुनिकरण को लेकर घोषणा की गई है, जिसके तहत श्रीराम स्टेडियम में फुटबॉल खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं प्राप्त होगी तथा एक आधुनिक खेल स्टेडियम के रूप में श्रीराम स्टेडियम विकसित होगा ,बजट घोषणा का शीघ्र क्रियान्वनन हो इसको लेकर विधायक राधेश्याम बेरवा व भाजपा जिलाध्यक्ष नरेश सिंह सिकरवार ने कलक्टर तोमर से मुलाकात कर शीघ्र कार्य प्रारंभ करने की बात कही। जिस पर जिला कलक्टर तोमर ने आश्वासन दिया कि शीघ्र ही श्रीराम स्टेडियम का कार्य प्रारंभ किया जाएगा, वहीं बारां शहर में एक और बेहतरीन खेल स्टेडियम की सौगात भी दी जाएगी, इसके लिए प्रक्रिया चल रही है , जिला कलक्टर ने खेलों के विकास को लेकर गंभीरता प्रकट करते हुए कहा कि जिले के खिलाड़ियों को बेहतरीन खेल का माहौल देने के प्रयास किए जा रहे हैं,

जिला फुटबाल संघ के अध्यक्ष भीमराज चौधरी ने बताया कि भारतीय नव संवत्सर के उपलक्ष में फुटबॉल प्रतियोगिता का शनिवार को आयोजन श्रीराम स्टेडियम में किया गया।

प्रभारी मंत्री ओटाराम देवासी ने किए भगवान कल्याण राय जी के दर्शन, पुजारियों ने किया माल्यार्पण कर स्वागत

बारां । बारां जिले के प्रवास पर आए बारां जिला प्रभारी मंत्री ओटाराम देवासी ने शहर के आराध्य देव भगवान श्रीकल्याण राय जी के मंदिर पहुंचकर दर्शन किए एवं विधि विधान से पूजा अर्चना की, इस दौरान मंदिर के पुजारियों ने पंडित दुर्गा शंकर शर्मा एवं पंडित राजेंद्र शर्मा की अगवाई में उनका माल्यार्पण कर स्वागत सत्कार किया। भाजपा मीडिया विभाग कोटा संभाग के सह -संयोजक राजेंद्र शर्मा ने बताया कि प्रभारी मंत्री देवासी में इस प्राचीन मंदिर को देखकर कहा कि मंदिर में श्रीजी कल्याण राय की मूरत बड़ी ही आकर्षित है, दर्शन करते समय ऐसा लगता है कि बस श्रीजी भगवान की मूर्ति को निहारते ही रहो। मंत्री देवासी ने कहा कि इनका आशीर्वाद हमसब पर हमेशा बना रहे, यही प्रार्थना प्रभु से है। इस मौके पर बारां-अटरू विधायक राधेश्याम बेरवा व निवर्तमान भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल सुमन, बारां नागरिक सहकारी बैंक के अध्यक्ष हरगोविंद जैन, बारां शहर अध्यक्ष ओ. पी. पारेता, महेश अदलक्खा, लोकेश शर्मा, सह प्रवक्ता योगेश राजोरा,पुजारी संघ के दुर्गा शंकर शर्मा, पंडित राजेंद्र शर्मा, पंडित हेमंत शर्मा एवं पंडित अमित शर्मा, अंकित पुजारी,प. सत्यनारायण शर्मा तथा भाजपा कार्यकर्ता विजयेंद्र नागर, यग्नेश शर्मा, रोहित नायक, वंश प्रताप सिंह सहित इत्यादि उपस्थित रहे।

जिला निष्पादन समिति की बैठक हुई संपन्न

बूंदी। जिला निष्पादन समिति की बैठक गुरुवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में अतिरिक्त जिला कलक्टर सुदर्शन सिंह तोमर की अध्यक्षता में आयोजित हुई, जिसमें शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि शेष रहे निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा करवाया जाए। आगामी प्रवेशोत्सव के दौरान अधिक से अधिक नामांकन हो, इसके लिए योजना बनाकर अभी से प्रयास शुरू किए जाएं। जिले का कोई भी विद्यालय शौचालय सुविधा से वंचित नहीं रहे, इस पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए कि बच?चों के आधार कार्ड का बैंक खाते से लिंक कराया जाएं। उन्होंने कहा कि विशेष प्रयास कर जिले की रैंकिंग को बढ़ाया जाएं। उन?होंने पीएम श्री विद्यालय के प्रस्ताव पर चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर ने एसडीआरएफ कार्यो, आधार जन आधार प्रमाणीकरण, एनपीसीआई आधार सीडिंग, शाला स?वास?थ?य कार्यक्रम, विद्यार्थी अपार आईडी प्रगति, आईसीटी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण के निष?क्रिय उपकरणों के निस?तारण एवं नीलामी करवाने, बजट घोषणा आदि की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. महावीर शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी ओम गोस?वामी, रेडक्रॉस सचिव अशोक विजय सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

फुलवाड़ा की देव बांदरा बाबा ग्राम विकास समिति द्वारा 5 लाख स्कूल निर्माण में सहयोग राशि दी

सवाई माधोपुर। जिला कलक्टर शुभम चौधरी द्वारा जिले में संचालित अभिनव कार्यक्रम भविष्य की उड़ान से प्रेरित होकर मुख्य मंत्री जनसभागिता विद्यालय विकास योजनान्तर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फुलवाड़ा की देव बांदरा बाबा ग्राम विकास समिति द्वारा 5 लाख तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बसोव कला के प्रधानाचार्य जितेंद्र कुमार मीना द्वारा खंडार विधायक जितेंद्र गोठवाल,अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, पंचायत समिति खंडार प्रधान नरेंद्र चौधरी एवं अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा दिनेश कुमार गुप्ता, की उपस्थिति में जिला कलक्टर शुभम चौधरी को मुख्यमंत्री जन सहभागिता विद्यालय विकास योजनान्तर्गत जमा करवाने हेत सुपुर्द किया । कार्यक्रम अधिकारी समग्र शिक्षा हेमराज मीना ने बताया कि राउमावि फुलवाड़ा हेतु प्राप्त 5 लाख की राशि में राज्य सरकार से अंशदान के रूप में प्राप्त 60 प्रतिशत राशि 7 लाख 50 हजार रुपए सहित प्राप्त कुल राशि 12 लाख 50 हजार रुपए से विद्यालय में हॉल निर्माण, विद्यालय सौंदर्यकरण, तथा विभिन्न मरम्मत कार्य करवाया जाएगा। इसी प्रकार राउमावि बासोव कला हेतु प्राप्त 3 लाख की राशि में राज्य सरकार से अंशदान के रूप में प्राप्त 60 प्रतिशत राशि 4 लाख 50 हजार रुपए सहित प्राप्त कुल राशि 7 लाख 50 हजार रुपए से विद्यालय में कंप्यूटर एवं फर्नीचर क्रय प्रवेश द्वार निर्माण, विद्यालय सौंदर्यकरण, तथा विभिन्न मरम्मत कार्य करवाए जाएंगे।

जिले के सरकारी विद्यालयों की आधारभूत संरचना के विकास हेतु शिक्षा विभाग व जिला प्रशासन द्वारा संचालित अभिनव कार्यक्रम भविष्य की उड़ान से प्राप्त राशि के माध्यम से प्राप्त राशि एवं मुख्यमंत्री जनसहभागिता विद्यालय विकास योजना से प्राप्त अंशदान से जिले के विद्यालयों में भौतिक विकास कार्य करवाए जा रहे है

जिससे राजकीय विद्यालयों का कायाकल्प हो रहा है तथा विद्यार्थियों को आवश्यक मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हो रही है। इस दौरान आशाराम मीणा,रिटायर्ड आईआरएस,शशिकला बंशीवाल,सहायक परियोजना समन्वयक, विद्यालय स्टाफ से विजय मीना,राजबहादुर,अनवर अली, कविता मीणा तथा पृथ्वीराज मीणा,पूर्व सरपंच पाडली इत्यादि उपस्थित रहे।

गांव मानराजपुरा में पैंथर का मूवमेंट , पैंथर ने किया बछड़े का शिकार, ग्रामीणों में भय का माहौल

खंडार। फलोदी रेंज के गांव मानराजपुरा में रोजाना पैंथर का मूवमेंट बना हुआ हैं, आज रात देशराज गुर्जर के बाड़े मै बंधे जानवरो में एक गाय के बछड़े का शिकार किया , जिससे ग्रामीणों में भय का माहोल बना हुआ है । देशराज गुर्जर ने जानकारी देते हुए बताया कि पैंथर का कुछ दिनों से गांव की ओर मूवमेंट बना हुआ है और वह शिकार की तलाश में यहां आता रहता है, हम सभी गांव वाले रात को घर से बाहर निकलने में अपने आप को असुरक्षित महसूस करते हैं, देशराज गुर्जर ने बताया कि हमने क्षेत्रीय वन अधिकारी फलोदी रेंज को इस हेतु ज्ञापन देते हुए उचित मुहावना की मांग की एवं हमें वन्य जीवों से स्थाई सुरक्षा प्रदान करने के लिए उनसे आग्रह किया।

जिला कलक्टर ने जागरूकता उत्पन्न करने की गतिविधियां आयोजित करने की जताई आवश्यकता

हिन्दुस्तान स्काउट गाइड की कार्यकारिणी ने की कलेक्टर से शिष्टाचार भेंट

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बून्दी। हिन्दुस्तान भारत स्काउट गाइड संगठन की नवगठित कार्यकारिणी के सदस्यों ने जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा से शिष्टाचार भेंट कर जिले में चलाई जा रही स्काउट गाइड गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर कार्यकारिणी के सदस्यों ने कलेक्टर गोदारा को गुलदस्ता व स्कार्फ भेंट कर अभिनन्दन किया। जिला कलेक्टर गोदारा ने सदस्यों को जिले के समस्त बालक बालिकाओं में जागरूकता उत्पन्न करने की गतिविधियां आयोजित करने की आवश्यकता जताई और जागरूकता गतिविधियों के सफलतापूर्वक संचालन के प्रति सकारात्मक संदेश दिया। साथ ही जिले में कार्यकारिणी सदस्यों को सौंपे गए दायित्वों को सफलता से पूर्ण करने की बात कही।

इस अवसर पर जिला आयुक्त मुख्यालय कृष्ण कान्त राठौर, जिला सचिव लोकेश कुमार जैन, जिला कोषाध्यक्ष निधि गंगवाल जैन, डी. ओ. स्काउट गिरधारी लाल शर्मा, सहसचिव पुरुषोत्तम दाधीच, ट्रेनिंग काउंसलर अतिश वर्मा, ज्योत्सना कुमावत सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

युवा शक्ति का प्रदेश के विकास और राष्ट्र निर्माण में अधिक योगदान सुनिश्चित किया जाए - भजनलाल शर्मा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास है कि युवा शक्ति का प्रदेश के विकास और राष्ट्र निर्माण में अधिक से अधिक योगदान सुनिश्चित किया जाए। इसी क्रम में हम युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने और उनकी प्रगति के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार युवा उद्यमिता को बढ़ावा देने के साथ ही, सरकारी और निजी क्षेत्र में 10 लाख रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के अपने संकल्प पर तेजी से काम कर रही है। जिला मुख्यालयों पर रोजगार मेला एवं कैम्पस प्लेसमेंट का आयोजन किया जा रहा है, ताकि हर क्षेत्र के युवाओं को उनकी योग्यता के अनुसार अवसर मिल सकें।

शर्मा राजस्थान दिवस के साप्ताहिक कार्यक्रमों की कड़ी में शनिवार को कोटा के दशहरा मैदान में आयोजित मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव एवं युवा सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सात दिवसीय राजस्थान दिवस महोत्सव हमारी मातृशक्ति, युवा शक्ति, अन्नदाता और अंत्योदय को समर्पित हैं। उन्होंने कहा कि हम युवाओं को रोजगार देने के साथ ही उनमें उद्यमिता का विकास कर उन्हें रोजगार देने योग्य भी बना रहे हैं।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने युवा वर्ग को कई सौगातें देते हुए विभिन्न विभागों में नव चयनित कार्मिकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। प्रदेशभर में 7 हजार 800 से अधिक कार्मिकों को नियुक्ति पत्र प्राप्त हुए। इसके साथ ही शर्मा ने 'मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान' का भी शुभारंभ किया। इस दौरान अभियान से संबंधित वीडियो फिल्म का प्रदर्शन एवं विवरणिका का विमोचन किया गया। श्री शर्मा ने शिक्षा विभाग के दो ऐप एवं आरएसओएस अन्तर्गत ऑन डिमाण्ड परीक्षा तथा डिजिटल प्रवेश उत्सव का शुभारंभ करते हुए विद्यार्थियों को बैग एवं यूनिफॉर्म की डीबीटी की शुरूआत की। कार्यक्रम में युवा नीति एवं स्किल नीति का विमोचन, निजी क्षेत्र में रोजगार पर 10 हजार रूपये की सहायता हेतु योजना के दिशा-निर्देश, द्रोणाचार्य अवार्डियों को भूमि आवंटन हेतु दिशा-निर्देश, अटल ज्ञान केन्द्र तथा नई किरण नशा मुक्ति केन्द्र के दिशा-निर्देश भी जारी किए गए। मुख्यमंत्री ने रोजगार मेले के तहत आयोजित प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

राजकीय सेवाओं में चयनित जिले के 120 युवाओं को प्रदान किए गए नियुक्ति पत्र

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। राजस्थान दिवस साप्ताहिक महोत्सव के तहत नगर परिषद टाउन हॉल में शनिवार को जिला स्तरीय मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव एवं युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिला स्तरीय कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी मौजूद रहे।

» धौलपुर - युवक को नियुक्ति पत्र देते जिला कलक्टर श्रीनिधी बीटी

कार्यक्रम में उपस्थित नवचयनितों संबोधित करते हुए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने कहा कि सार्वजनिक सेवा में कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हुये आगे बढ़ने के सतत प्रयास जारी रखे। लोकसेवक ईमानदारी से कार्य करते हुये कर्तव्यों का निर्वहन करे। इस दौरान कोटा के दशहरा मैदान में आयोजित राज्य स्तरीय मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव एवं युवा सम्मेलन का वी सी के जरिये सीधा प्रसारण किया गया।

जिला स्तरीय कार्यक्रम में 120 नवचयनितों को प्रदान किये नियुक्ति-पत्र

जिला स्तरीय मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव एवं युवा सम्मेलन में जिला कलक्टर ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग में छात्रावास अधीक्षक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में नर्सिंग ऑफिसर,फार्मासिस्ट एवं एएनएम तथा महिला बाल विकास विभाग में महिला पर्यवेक्षक पद पर चयनित जिले के कुल 120 नवचयनितों को नियुक्ति पत्र एवं शुभकामना संदेश प्रदान किये।

कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीणा, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ धर्मसिंह मीणा, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के एसीपी बलभद्र सिंह, उपाध्यक्ष मुकेश शर्मा, सहित जनप्रतिनिधि एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी व बड़ी संख्या में युवा लाभार्थी मौजूद रहे।

सांस्कृतिक संध्या का आयोजन मचकुंड पर

राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य में भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम 30 मार्च, रविवार को मचकुंड, धौलपुर में संध्या 6 बजे से प्रारंभ होगा। इस विशेष अवसर पर स्थानीय लोक कलाकारों एवं प्रख्यात राजस्थानी कलाकारों द्वारा लोकगीत, मयूर नृत्य, फूलों की होली, चरकुला नृत्य सहित विभिन्न पारंपरिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाएंगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत राष्ट्रीय भावना को समर्पित एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें धौलपुर के प्रतिष्ठित एवं स्थानीय कवि अपनी काव्य प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करेंगे। यह आयोजन राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं लोक परंपराओं को संजोने और बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

धौलपुर जिले से नेशनल क्रिकेट अकादमी में तीन खिलाड़ियों का चयन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। बीसीसीआई की राष्ट्रीय अंडर-16 क्रिकेट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले राजस्थान के रजत बघेल, आराध्य अग्रवाल, शिफॉन खान, सुजल परमार, हर्ष सिंह का नेशनल क्रिकेट अकादमी में चयन, जिसमें से तीन खिलाड़ी धौलपुर जिले से है। अब ये खिलाड़ी बीसीसीआई द्वारा 18 अप्रैल से 14 मई 2025 तक तमिलनाडु स्थित एनसीए के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में विशेष प्रशिक्षण शिविर में भाग लेंगे। जिला क्रिकेट संघ के प्रवक्ता संजीव श्रीवास्तव ने बताया कि बीसीसीआई की नेशनल क्रिकेट अकादमी के मुख्य कोच बीबीएस लक्ष्मण ने रजत बघेल, सुजल परमार और हर्ष सिंह का एनसीए में चयन किया है। धौलपुर जिले से एनसीए में एक साथ चयनित तीन खिलाड़ियों का होना गर्व की बात है। यह कैंप भारत के पांच राज्यों में आयोजित किया जा रहा है। जिला क्रिकेट संघ के सचिव सुमेंद्र तिवारी ने बताया कि प्रदेश में धौलपुर पहला जिला था जहां से टीम में 4 खिलाड़ियों को अंडर 16 क्रिकेट

टीम का हिस्सा बनने का मौका मिला। राजस्थान में ऐसा पहली बार हुआ है कि एक जिले से तीन खिलाड़ी एनसीए कैंप में भाग लेंगे। ये तीनों खिलाड़ियों के पास आईपीएल और भारतीय टीम में आने का सुनहरा अवसर है और जूनियर खिलाड़ियों इन चयनित खिलाड़ियों से प्रेरित होना चाहिए। यह कैंप 18 अप्रैल से 14 मई तक आयोजित किया जाएगा। बीसीसीआई ने घरेलू क्रिकेट सत्र की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों की प्रतिभा को ओर अधिक सुदृढ़ करने के लिए एनसीए के अंतर्गत देश के विभिन्न केंद्रों पर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किए हैं। इन सभी खिलाड़ियों को 17 अप्रैल प्रशिक्षण केंद्र पर रिपोर्ट करना है। नेशनल क्रिकेट एकेडमी में खिलाड़ियों के चयन पर जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष रोहित वोहरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष भूपेंद्र राणा, सचिव सुमेन्द्र तिवारी, पूर्व जिला प्रमुख पंडित किशन चंद शर्मा, बोहरे रामअवतार शर्मा, सुनील राणा, वीरेंद्र जादौन, विनोद पाठक, नरेन्द्र मीना, अतुल भार्गव, जितेंद्र राजोरिया, नरेंद्र तोमर, फिरोज खान टायर वाले, पप्पन तिवारी, अजीत गुप्ता, दिलीप चाहर, मंजरी फाउंडेशन के निदेशक संजय शर्मा, भावेन्द्र लाल संतानिया, लोकेन्द्र राजौरिया, पूर्व खिलाड़ी चन्द्रमोहन त्रिवेदी, रवि मोहन त्रिवेदी, राहुल राना, विनोद तिवारी, मोहसिन खान, बीसीआई कोच दुष्यंत त्यागी, सुरजीत सिंह, गौतम गोस्वामी, आर्यन शर्मा, अभिषेक गोला, संजीव गुर्जर, अजय कान्त शर्मा सहित अन्य खेलप्रेमियों ने बधाई दी।

» धौलपुर अतिक्रमण पर कार्रवाई करती जेसीबी

राजाखेड़ा बाईपास पर चला मास्टर प्लान, 100 फीट चौड़ा होगा रोड

24 घंटे में अतिक्रमण हटाने का दिया अल्टीमेटम

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। शहर के राजाखेड़ा बाईपास पर नगर परिषद ने अतिक्रमण हटाओं अभियान चलाया। नगर परिषद आयुक्त अशोक शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया शनिवार को राजाखेड़ा बाईपास पर जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी के निर्देशन में मास्टर प्लान चलाया गया। जिसमें जिन लोगों ने नालों के ऊपर पक्के निर्माण कर रखे उनको ध्वस्त किया गया और शहर में जलभराव की स्थिति को देखते हुए नगर परिषद ने राजाखेड़ा बाईपास पर सड़क बीचो-बीच से 50-50 फीट दोनों तरफ पक्के दुकान व भवनों पर रेड लाईन खींच दी गई है और उन्हें 24 घंटे का समय दिया गया है कि वह अपने पक्के निर्माण को स्वयं ही हटा लें अन्यथा नगर परिषद द्वारा इन दुकान व मकानों को ध्वस्त कर दिया जायेगा। जिसकी जिम्मेदारी स्वयं की होगी। प्रशासन द्वारा इस सड़क मार्ग को 100 फीट चौड़ा किया जा रहा है। इसके बाद पक्के नाले का निर्माण कराया जायेगा। जिससे भविष्य में जलभराव की स्थिति से लोगों को छुटकारा मिल सकेगा।

माता रैहना वाली मंदिर पर लगने वाले लखखी मेले का हुआ उद्घाटन

भाजपा नेत्री नीरजा अशोक शर्मा व पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने काटा फीता

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। जिले के मरैना कस्बे में स्तिथ बीहड़ों में माता रैहना वाली मंदिर पर प्रतिवर्ष नवदुर्गा में लगने वाले विशाल लखखी मेले का शनिवार सुबह विधि विधान से पूजा अर्चना कर भाजपा नेत्री नीरजा अशोक शर्मा व बाड़ी के पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने फीता काटकर उद्घाटन किया।

» राजाखेड़ा... मेले का उद्घाटन करते पूर्व विधायक मलिंगा एवं भाजपा नेत्री नीरजा शर्मा

सुबह 10 बजे सैकड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र माता रैहना वाली मंदिर जिसके साथ ही लाठवाली माता मंदिर पर आज से शुरू होने वाले लखखी मेले का स्थानीय प्रशासन की ओर से पूर्ण तैयारियों के साथ उद्घाटन किया गया। मेले का उद्घाटन राजाखेड़ा से भाजपा प्रत्याशी रहीं भाजपा नेत्री नीरजा अशोक शर्मा व बाड़ी के पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने मंदिर परिसर पहुंचकर पूर्ण विधि विधान व मंत्रोउच्चारण के साथ हवन पूजन के साथ फीता काटकर उद्घाटन किया। जिसके बाद अतिथियों ने मंदिर परिसर में माता रानी के दिव्य दर्शन कर आरती की गई। जिसके बाद मंदिर कमेटी व मेला कमेटी की ओर से नीरजा शर्मा व गिर्राज सिंह मलिंगा का साफा व माला के साथ माता रैहना वाली की तस्वीर भेंट कर स्वागत सम्मान किया।

इस अवसर पर भाजपा नेत्री नीरजा अशोक शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे जिले में माता रहना वाली व माता लाठवाली मंदिर ये दोनों ही मंदिर बड़ी आस्था के केंद्र हैं जहां हर वर्ष राजस्थान के साथ साथ दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व हरियाणा तक से श्रद्धालु दर्शन करने आते है। जहां बड़ा लखखी मेला भरता है और अपनी आस्था की डुबकी श्रद्धालु यहां लगाते है। जिसके लिए प्रशासन भी पूर्ण रूप से मुस्तैद है और बजट में भी राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विशेष बजट मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए दिया है।

पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने संबोधित करते हुए कहा कि मैं आप सभी का धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मुझे इस विशेष अवसर पर बुलाया और इस मेले की तैयारियों के लिए भी प्रशासन व मेला कमेटी का धन्यवाद देता हूं। मलिंगा ने कहा कि आपकी नेता नीरजा शर्मा यहां के विकास के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। जिसके बाद मंदिरों के लिए विशेष बजट मिला है, अब पूर्ण रणनीति के साथ मंदिर परिसर के अंदर निर्माण करवाया जाए जिससे व्यवस्था अच्छी हो सकें। कार्यक्रम में इस दौरान राजाखेड़ा तहसीलदार दीप्ति, नायब तहसीलदार हरिओम शर्मा, मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारी, थानाधिकारी दिहौली परमजीत सिंह मय पुलिस जाप्ता, केदार पोषवाल, रामवती जाटव, हुकुम सिंह लोधा, जयवीर पोषवाल, रामावतार त्यागी, रामवीर सिसोदिया, हाकिम सिंह लोधा, अमीरी कुशवाहा, सोबरन सिंह, केके शर्मा, रामू सिकरवार, तिलक गुर्जर, राजेंद्र सिंह, अचल सिंह तोमर एवं मंदिर पुजारी के साथ-साथ अन्य लोग मौजूद रहे।

निर्माण श्रेणी के वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई कर तीन दर्जन से अधिक वाहनों को किया सीज

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। राज्य सरकार द्वारा आवंटित राजस्व लक्ष्यों की प्राप्ति को लेकर विभाग द्वारा चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत जिला परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग द्वारा जिले में निर्माण श्रेणी के वाहनों के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई की गई।

जिला परिवहन अधिकारी गौरव यादव व परिवहन निरीक्षक मनोज कुमार व गौरव सक्सेना के साथ संघन जांच अभियान में पाली - चुरारी बाड़ी क्षेत्र एवं बाड़ी बसेड़ी व राजाखेड़ा क्षेत्र में रेल्वे प्रोजेक्ट के आसपास की गई कार्रवाई में निर्माण श्रेणी के वाहनों पर प्रशमन राशि वसूली गई। जिला परिवहन अधिकारी गौरव यादव ने बताया कि सघन रूप से की गई कार्रवाई में बाड़ी क्षेत्र के पाली- चुरारी एरिया से एक बैकहो लोडर, एक बूम प्लेसर एक क्रेन व 4 डंपरों को सीज किया गया है।

बसेड़ी बाड़ी क्षेत्र से एक क्रेन माउंटेन, दो ट्रैक्टर लोडर एक लीडर तीन क्यूबिक के साथ 12 बिना टैक्स के भार वाहन सीज किए गए हैं । राजाखेड़ा क्षेत्र से एक बैकहो लोडर, तीन डंपर, तीन ट्रैक्टर लोडर, 6 बिना टैक्स के संचालित भार वाहनों के साथ मिल्क टैंकर चीज किए गए। इन सभी वाहनों से लगभग 34 लाख रुपए टैक्स वसूला गया। उन्होंने बताया कि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभाग दिन-रात प्रयासरत है।

विभाग द्वारा 31 मार्च तक ऐसे सभी भार वाहनों के विरुद्ध ऑपरेशन कैचअभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत बिना टैक्स में एक ही वाहन संचालित नहीं होने दिया जाएगा अतः वाहन स्वामियों से अपील है कि अपने वाहन के कर को आज ही जमा कराया जाना सुनिश्चित करें ताकि आपको होने वाले आर्थिक नुकसान एवं लगने वाले ब्याज पेनल्टी एवं शास्ति एवं वाहन के सीज होने से बचा जा सके

लापता मंदबुद्धि बालक मिला एमपी के सागर में

23 महीने से नही लगा पता तो परिजनों ने लगाई थी हाईकोर्ट में याचिका

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर के तुलसी वन रोड स्थित गायत्री कॉलोनी से करीब 23 महीने पहले एक मंदबुद्धि 11 वर्षीय बालक गायब हो गया था। गायब बालक की काफी तलाश करने के बाद जब परिजनों को सफलता नहीं मिली तो कोतवाली थाने में रिपोर्ट दी गई। पुलिस द्वारा काफी मशक्कत के बाद जब बालक का पता नहीं लगाया जा सका तो परिजनों ने हाईकोर्ट में अपील दायर की। हाईकोर्ट ने मामले को संज्ञान में लेते हुए एसपी धौलपुर को बालक को दस दिन में दस्तयाब करने के निर्देश दिए। इस पर एसपी धौलपुर द्वारा बालक की खोज करने वाले को 25000 रुपए का इनाम देने की घोषणा करते हुए विशेष टीम का गठन किया गया। पुलिस ने 7 दिन की अथक मेहनत के बाद बालक को एमपी के सागर से दस्तयाव कर लिया है।

» धौलपुर कार्यक्रम में विद्यार्थियों को जानकारी देते अतिथि।

बॉडी सर्किल अधिकारी महेंद्र कुमार ने बताया कि लापता बालक आकाश उर्फ अब्बा पुत्र बदरिया प्रजापति 15 जून 2023 को घर से बाहर निकालने के बाद लापता हो गया था ऐसे में मामले को लेकर लापता बालक के भाई दीपक पुत्र बेद्रीय ने पुलिस में गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया था। पुलिस द्वारा काफी मशक्कत की गई लेकिन बालक का पता नहीं लग सका।

एसपी सुमित महरेड़ा ने बालक को जल्द दस्तयाब करने के लिए 12 सदस्यीय टीम का गठन करते हुए बालक की खोज करने वाले को 25000 देने के इनाम की घोषणा की। ऐसे में कोतवाली एसएचओ अमित शर्मा,एसआई हरवीर सिंह, एएसआई वीरेंद्र सिंह के साथ कांस्टेबल वेदांत,ओमप्रकाश, श्रीपाल, सूबेदार, राजू,

बीरबल और अजब सिंह एवं हरेंद्र सिंह की चार टीमों का गठन कर अलग-अलग स्टेट में भेजी गई। कांस्टेबल अजब सिंह और हरेंद्र सिंह ने एमपी में बालक की तलाश की। जिसकी लोकेशन सागर में मिली। ऐसे में सागर आश्रम पहुंचकर बालक को दस्तयाब करने के बाद परिजनों से पहचान कराई गई। जिन्होंने अपने बालक की पहचान की है। आज बालक को बाड़ी लाकर उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया है। पुलिस एसआई अमित शर्मा, सीओ महेंद्र कुमार के साथ एडिशनल एसपी कमल कुमार जागिड़ का पूरी कार्रवाई में विशेष सहयोग रहा है।

13वीं राजस्थान राज्य क्लासिक पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप आज से

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। जिले में खेल प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण आयोजन होने जा रहा है। 13वीं राजस्थान राज्य क्लासिक अनएक्विप्ड सब जूनियर, जूनियर और मास्टर पुरुष एवं महिला पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप का भव्य आयोजन दो दिवसीय 30 और 31 मार्च 2025 को परशुराम धर्मशाला, धौलपुर में किया जाएगा।

जिला पावरलिफ्टिंग संघ धौलपुर के सचिव आकाश शर्मा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में राजस्थान के विभिन्न जिलों से पावरलिफ्टिंग के प्रतिभाशाली खिलाड़ी भाग लेंगे। यह आयोजन सब-जूनियर, जूनियर और मास्टर पुरुष एवं महिला वर्गों में आयोजित किया जाएगा, जिसमें विभिन्न भार वर्गों के अंतर्गत खिलाड़ियों की क्षमता और शक्ति का परीक्षण किया जाएगा।

जिला पावरलिफ्टिंग संघ, धौलपुर के कोषाध्यक्ष अभिषेक शर्मा ने बताया कि इस चैंपियनशिप का उद्देश्य पावरलिफ्टिंग को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों को एक राज्यस्तरीय मंच प्रदान करना है, जिससे वे अपने हुनर को निखार सकें और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में आगे बढ़ सकें।

पूर्व विधायक बीएल कुशवाह ने रोजा इफ्तार कार्यक्रम किया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। शनिवार को जीटी रोड के करीब एस के गार्डन में रोजा इफ्तार कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में पूर्व विधायक बीएल कुशवाह सभी मुस्लिम समाज के लोगों के बीच में बैठकर रोजा इफ्तार कार्यक्रम में शामिल हुए उसके बाद स्क गार्डन में ही नमाज अदा कराई गई बाद नमाज के सभी लोगों को खाना खिलाने का प्रोग्राम किया गया। इस मौके पर सभी गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष साकेत बिहारी शर्मा, मोनू जादौन पूर्व प्रधान कमल कंसाना की पूर्व सभापति इसरार अहमद पूर्व उपसभापति, पंडित राम अवतार शर्मा, विक्की शर्मा, आनंद शर्मा, धनेश जैन, प्रवक्ता कांग्रेस तथा धीरू जाट पार्षद, रोजा इफ्तार कार्यक्रम में सुलेमान फारुकी जिला संयोजक मदरसा कमेटी धौलपुर मुन्ना खान अब्बासी, पूर्व जिला आप कमेटी अध्यक्ष शहजाद जल मानी, जिला महासचिव कांग्रेस निजामुद्दीन निजामुद्दीन पूर्व पार्षद सद्दाम खान, पार्षद फारूक उस्मानी, पार्षद राशिद खान, पार्षद पार्षद प्रतिनिधि मोमिन खान, उमर फारूक उस्मानी, ब्लॉक अध्यक्ष फरहत खान, एडवोकेट माहिर हसन रिजवी, माजिद शरीफ, राशिद अमन खान, इमरान खान, अनवर अहमद, वहीद अहमद आमिल खान, वरिष्ठ पत्रकार मुन्ना फारूकी आदि मौजूद रहे। जावेद बैग करौलीअध्यापक, हाफिज अब्बासी एवं अन्य मुस्लिम समाज के लोग मौजूद रहकर रोजा इफ्तार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

» धौलपुर.. रोजा इफ्तार करते रोजदार

ईदगाह में ईद की नमाज 9:45 बजे होगी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। शहरकाजी मौहम्मद मतीन खान गौरी ने बताया कि जीटी रोड ईदगाह पर ईद की नमाज 9:45 बजे होगी। चांद नजर आने पर 31 मार्च या 1 अप्रेल को ईद की नमाज ईदगाह में अदा की जायेगी। शहरकाजी ने बताया कि ईदगाह में नमाज अदा करना अफजल है।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक **चन्द्रप्रकाश शिवहरे** के लिए मै. गुरूकृपा प्रकाशन प्रेस टीआईटी कॉम्पलैक्स मुरैना से मुद्रित एवं साई स्मार्ट सिटी,नगर परिषद ऑफिस के निकट,मचकुण्ड रोड,धौलपुर(राज.) से प्रकाशित आर.एन.आई. नं. **RAJHIN/2009/27740** संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, प्रबंध संपादक जितेन्द्र सिंह रजौरिया।
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र धौलपुर न्यायालय होगा। फोन: 05642-224444, 224666, 224777 फैक्स: 223324 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए स्थानीय संपादक जिम्मेवार